श्री वेंकटेश्वर स्वामी व्रत कथा

ललिता ऋषिकेश

ऋषिकेश नेहा ललिता

तारिख : सितंबर ५, २०१०

तारिख : सितंबर ७, २०१०

तारिख : सितंबर १२, २०१०

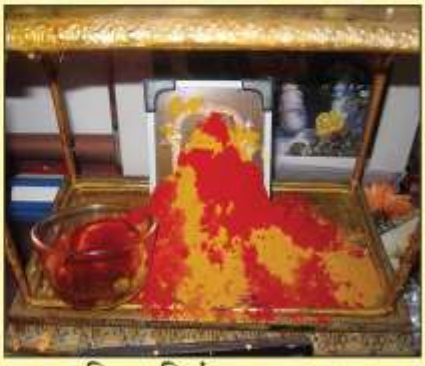

तारिख : सितंबर १२, २०१०

श्री वेंकटेश्वर व्रत कथा

Hindi translation by **Aparna and Anirudha Joshi** from Irvine, CA.

इस पुस्तक के प्रति के लिये:
https://www.venkateswaravratham.org/download
http://www.facebook.com/venkateswaravratham

ई-मेल: info@venkateswaravratham.org
वेबसाईट: www.venkateswaravratham.org

श्री वेंकटेश्वर व्रत कथा

प्रथम आवृत्ती: फेब्रुवारी, २०११ (हिंदी में)

Contents

शुरुवात करने से पहले... 5
मेरा रिश्ता - सात पर्वतों के ईश्वर से 5
श्री वेंकटेश्वर मंत्र 13
कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी 14
पूजा की सामग्री 14
व्रत की विधी 15
श्री वेंकटेश्वर व्रत कथा 17
प्रथम अध्याय 38
द्वितीय अध्याय 40
तृतीय अध्याय 42
चतुर्थ अध्याय 43
पंचम अध्याय 45

ॐ नमो वेंकटेशाय नमः

शुरुवात करने से पहले...

वेंकटाद्रि समं स्थानं नास्ति किंचन ।
वेंकटेश समदेवो न भूतो न भविष्यति ॥

(पूरे ब्रह्मांड में वेंकटाद्रि जैसा स्थान कही नही और उसपर स्थित वेंकटेश जैसा कोई देव ना पहले कभी हुआ ना कभी होगा।)

श्री वेंकटेश्वर की कृपा और आशीर्वाद पाने के लिये इस कलियुग में "श्रीवेंकटेश्वर व्रत" सबसे उत्तम माना जाता है। मैंने भगवान के कई चमत्कार और लीलाएँ बहुत सुनी थी। मैंने भगवान की जीवनभर पूजा की है। ये सबसे ज्यादा कृपालु, दया के सागर और अपने भक्तों के दु:खविनाशक देवता है। ये अपने भक्तों को चिंतासागर के पार ले जाते है। उनपर अपनी ममता और प्यार निछावर करते है। जो कोई अपना जीवन सही रास्ते से जाकर और भगवान को शरण जाकर व्यतित करते है, उनकी पूरी जिम्मेदारी भगवान लेते है, इस में कोई संदेह नही।

मेरे पूज्य पिताजी श्री. बुर्ले पुल्ला राव और माताजी श्रीमती बुर्ले वेंकटलक्ष्मी ने मुझे हमेशा श्रीवेंकटेशजी की अद्‌भुत कहानियाँ बतायी। उन्होने मेरे मन में इस सात पर्वतों के ईश्वर के बारे में जो निष्ठा और प्यार जताया उसकी कोई तुलना नही। जैसे जैसे दिन बितते गये वैसे वैसे मेरा मन वेंकटेश्वर की ओर बढता ही गया। मेरी जीवन का वो अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग बन गये। उनके प्रति मेरे मन में अनाकलनीय भक्ती भर गयी। जब तक मुझे याद है, मैं ने कभी भगवान से कुछ नही माँगा। एक ऐसा साहस मेरे कल्पना को मजबूत किये जा रहा था की मेरे भगवान मेरे सारे सुखदु:ख में मेरे साथ ही होंगे।

आजकल देवपूजा में भक्ति कम और स्वार्थ ज्यादा दिखाई देता है। ऐहिक जीवन से जुडी इच्छाएँ पूरी करने के लियेही पूजा की जाती है। जो साफ दिल से, कोई वासना ना रखते हुए भगवान का स्मरण करेगा उसे भगवान के दिव्य दर्शन का लाभ जरूर होगा।

भगवान ने मुझपर कृपा की है, उसके कुछ प्रत्यक्ष अनुभव मैं यहाँ बयान करना चाहती हूँ। श्रीनिवास (सात पर्वतों के ईश्वर, वेंकटेश, वेंकटेश्वर, बालाजी, तिरुमलेश, पेरुमल्ला, गोविंद आदि नामों से भी परिचित है), माता-पिता, सास-ससुर, बेटा-बहु, बेटी-दामाद के साथ प्यार से रहनेवाले भक्तों के घर जाते है। श्री लक्ष्मी (धन संपत्ती की देवी) वहाँ खुशी से नाच उठती है। कोई तो इच्छा रखना ये आम आदमी के लिये बडी नैसर्गिक बात है। जो इच्छा दूसरों को हानी पहुँचा सकती है, ऐसी इच्छा पूरी होने की चाह नही रखनी चाहिये। हमेशा अच्छी कामनाओं को ही मन में रखो। भगवान श्रीनिवास के मन में अपने भक्तों के लिये कल्पनातीत प्रेम और ममता है। हमे अपना पूरा दिल लगाकर, अहं को त्यागकर, नि:स्वार्थी होकर भक्ति से उनकी प्रार्थना करनी चाहिये।

मेरा रिश्ता - सात पर्वतों के ईश्वर से

मेरे माता पिता, श्री. बुर्ले पुल्ला राव और श्रीमती बुर्ले वेंकटलक्ष्मी, दोनों की देवभक्ति अवर्णनीय है। उन्होने बार बार तिरुमला जाकर नंगे पाँव पर्वत चढकर श्री बालाजी के दर्शन किये है। मेरे पिताजीने हमेशा पूरे दिलसे उनकी पूजा की है। मेरा जन्म मेरे नाना श्री. सिंगवरपु अनंत रमुलु और नानी श्रीमती कोटिरत्नम के घर खम्मम में १९८० में हुआ। साल २००० में मैं नौकरी की वजह से हैद्राबाद में होस्टेल में रहने लगी। एक दिन सपने में मैंने दैदिप्यमान प्रकाश देखा। उसके तेज में बाकी कुछ दिखायी नही दे रहा था। तब मैंने एक आवाज सुनी, "तुम्हे श्री वेंकटेश्वर स्वामी का व्रत तुरंत करना चाहिये"। जब मैंने मेरी आँखे खोली तो आसपास सारा अंधेरा था। मैं फिर से सो गयी। सुबह उठकर मैं अमीर पेट के मंदिर चली गयी और पूजारीजी से श्री वेंकटेश्वर स्वामी जी के व्रत के बारे में पूछा। वे इस व्रतके बारे में कुछ

नही जानते थे। मैंने बहुत से पूजारियों को पूछा पर कोई भी इस व्रत के बारे में नही जानता था। कुछ दिन बाद मैं सपने के और व्रतके बारे में भूल गयी। मैं हर साल तिरुमला जाकर, चलकर मंदिर पहुँचकर, अंग प्रदक्षिणा (जमीन पर लेटे हुए मंदिर को प्रदक्षिणा, ताकि शरीर का हर भाग जमीन को छुए।) करती थी। ये मैं बिल्कुल भी नही भुली पर व्रत और सपने के बारे में सबकुछ भूल गयी।

ऋषिकेश के साथ २००२ में मेरी शादी हो गयी। उसके साथ मैं कॅलिफोर्निया, अमेरिका में आ गयी। २००३ में हमारी पहली बेटी नेहा का जन्म हुआ। २००५ में जब भारत की यात्रा पर गये तो हम तिरुपति के दर्शन के लिये तिरुमला गये। मैंने अंग प्रदक्षिणा करने की सोची। हमारा रहने का स्थान मंदिर से काफी दूर था। सुबह जल्दी उठकर मैं पैसे लेकर वहाँ से निकली। सोचा, टॅक्सी लेकर मैं जल्दी पहुँच जाउँगी। इतने में एक घोडा गाडी आकर मेरे सामने रुकी। उसमेंसे एक बुजुर्ग नीचे उतरे और बोले, "मैं तुम्हे मंदिर ले चलता हूँ, चलो मेरे गाडी में बैठो"। मेरे पास वक्त नही था, दस मिनिट में मुझे मंदिर पहुँचना था। मैं चिंतित थी कि मुझे अंगप्रदक्षिणा करने मिलेगी या नही। मैंने उस बुजुर्ग से कहा, "अगर मैं आपकी गाडी से जाउँगी तो हम वक्त पर नही जा पायेंगे और मैं अंगप्रदक्षिणा कर नही पाउँगी। इसलिये मैं टॅक्सी से जाउँगी ताकि मैं वक्त पर पहुँच जाउँ"। उन्होने हँसकर मुझे वक्त पर ले जाने की तसल्ली देते हुए कहा, "तुम जरूर अंगप्रदक्षिणा करोगी"। उस वक्त मैं बिना कुछ सोचे गाडी में जा बैठी। वो मुझे मंदिर ले गये और एक अम्मा के हाथ सौंप दिया। उस अम्मा का सतेज मुख मुझे अभी भी याद है। उसके मुखमंडल पर हल्दी लगी हुई थी और भाल पर बडा कुमकुम था। नाक में दो गहने और बाल में फूल थे। बहुत ही खुबसुरत लग रही थी जैसे कि साक्षात् देवी पद्मावती। उसने मेरा हाथ थामा और मुझे वो पुष्करिणी की तरफ ले गयी। तीन बार उसने मुझे पानीमें डुबकियाँ लगायी और मेरे चेहरे पर हल्दी, कुमकुम लगाकर सूर्य नमस्कार करने के लिये कहा। उसके बाद वो मुझे ध्वज स्तंभ से (सामने के दरवाजे से) मंदिर ले गयी। अंगप्रदक्षिणा के बाद श्री वेंकटेश्वर के खास दर्शन भी करवाये। ऐसे शुभ दर्शन के लिये मैं उसके आभार मानना चाहती थी। मैंने उसको आसपास देखा, लोगोंको पूछा पर कही नही मिली।

मेरी तो सूझबूझ ही खो बैठी। जहाँ मुझे गाडीवाले बुजुर्ग ने छोडा था वहाँ जाकर मैं ने लोगों से पूछताछ की। कोई भी उस बुजुर्ग और अम्मा के बारे में नही जानता था। वहाँके पूजारी और सभी लोगों ने बताया कि किसी ने यहाँ कोई भी घोडागाडी कभी देखी नही है। टॅक्सी के लिये जो पैसे मैं लेकर चली थी, वो अभी भी मेरे हाथ में थे। आश्चर्य की बात ये थी कि तीन बार पानी में जाकर भी वो गिले नही हुए थे। अब मुझे सब कुछ समझ में आया। वो बुजुर्ग जो मुझे मंदिर लेके आए उनपर मैंने पूरा विश्वासा किया, वो कोई और नही, स्वयं वेंकटेश्वर थे। और वो अम्मा जिसने मुझसे सूर्यदेव की प्रार्थना करवायी, मंदिर ले जाकर खास दर्शन करवाये, वो कोई और नही पर स्वयं देवी पद्मावती थी। उनको ना पहचान ने की मेरी भूल पर मैं बहुत पछतायी। मैं बहुत खुश भी हो गयी। मुझे अम्मा के शब्द याद आये "मैं तुम्हे **मेरे** भगवान के जरूर दर्शन कराउँगी"। मेरे समझ में आया कि ये सारी बात उसी की लीला थी। मैंने वापस जाकर सब को जो हुआ वो बताया। मेरे पती, देवर गणेश, उनकी पत्नी शिवप्रिया और बाकी सारे लोग थे। उन्होने भी सबको पूछा, सभी ने बताया कि तिरुमला में घोडागाडी नही है। मुझे नही पता कि किसीने मेरी बातों पर विश्वास किया या नही पर मुझे पूरा यकिन है कि वो श्री वेंकटेश्वर और देवी पद्मावती ही थे।

उसके बाद हम कॅलिफोर्निया लौटे। २००५ की ये तिरुमला की यात्रा मेरे लिये अविस्मरणीय रही। जो सपना मैं ने २००० में देखा था वो फिर से २०१० के मे महिने में मुझे दिखाई दिया। वही तेजस्वी प्रकाश, वही आवाज और वही व्रत करने की सूचना। इस बार व्रत की सूचनाके साथ व्रत प्रचार की सलाह भी थी। श्री बालाजी की अद्‌भुत लीलाएँ बताकर लोगों को ये व्रत करने के लिये प्रेरित करना है। उसने कहा, "तुम्हारा जन्म इस व्रत की महिमा आम लोगों तक पहुँचाने के लिये ही हुआ है"। मैं ने भगवान से पूछा, "मैं अकेली, किसी के मदद के बिना इतना बडा कार्य कैसे कर पाउँगी? मेरी कौन सुनेगा और क्यों सुनेगा? कोई मुझ पर क्यों विश्वास करेगा?" ये मेरे प्रश्न सुनकर भगवान हँस पडे और बोले, "तुम ये व्रत अपने घर में करो, तुम्हे मार्ग दिखाई देगा"। इतना ही नही, भगवान ने मुझे तुरंत इसका पुस्तक भी लिखने के लिये कहा।

मैंने मेरे पती, ऋषिकेश से सपने के बारेमें बताया। उन्होने मुझपर विश्वास किया और भगवान ने बतायी हर बात करने के लिये तैयार भी हो गये। हमने शनिवार, जून २६, २०१० को पूर्णिमा के दिन पहली बार श्री बालाजी व्रत को संपन्न किया। रविवार, जुलै २५, २०१० को पूर्णिमा के दिन दूसरी बार व्रत संपन्न किया। हमने १५ अलग अलग पदार्थ और फलों का "महानैवेद्य" समर्पित किया और पूजाघर का दरवाजा बंद किया। आधे घंटे बाद जब हम पूजाघर में गये तब जो दृष्य देखा वो कल्पनातीत था। चावल का बडा निवाला भगवान की फोटो पर लगा था। शनिवार, सप्टेंबर ४, २०१० को एकादशी (पवित्र दिन) के दिन हमने फिर एक बार व्रत संपन्न किया। इस दिन भी हमने "महानैवेद्य" भगवान को अर्पण किया। पिछली बार की तरह पूजाघर का दरवाजा बंद कर दिया। जब हम पूजाघर में गये तब देखा कि महानैवेद्य एक गोले में एकत्रित करके रखा था। तुरंत मैंने सबको बुलाकर ये आश्चर्यजनक बात दिखायी। सब लोग अचंबित हो गये। ये दिन मैं कभी भूल नही पाई हूँ। बडा ही दैवी अनुभव था ये, जो शब्दों में बाँधा नही जा सकता। उस दिन से हमने भगवान की बहुत सारी लीलाएँ हमारे घर में होते हुए देखी और देख रहे है। आज जानेवारी २, २०११ है, आजतक हर रोज हम दैवी अनुभव ले रहे है। इस भाषांतर में हम वही सारे चमत्कार लिखेंगे जो हमारे तेलगु पुस्तक में छपें है। ये सारे चमत्कार सप्टेंबर ५, २०१० से ऑक्टोबर १०, २०१० तक ही सिमित है।

सप्टेंबर ५, २०१०: सुबह उठकर मैंने मेरा मुँह शिशेमें देखा और देखती ही रह गयी। मेरे मुख पर नाक से बालों तक नामालु (३ चंदन की रेखाएँ) आ गया था। उस दिन मैंने जाना कि भगवान मेरे घर में आकर बस गये है। हमने भगवान की पूजा की और कुछ खरीदारी के लिये बाहर निकल पडे। शाम को घर लौटे और देखा तो आरती की थाली सजी हुई थी। दियेमें घी के साथ बाती तैयार थी। जैसे कि हम अभी भगवान की आरती करनेवाले है। ये क्या हो रहा था, हम कुछ समझ नही पा रहे थे। थोडासा डर भी लगा। घर में तो कोई नही था। बाहर ताला लगा हुआ था। कौन अंदर आया? किसने की ये सारी तैयारी? हमने हमारे मन को समझाया कि ये सारी उसी कलियुग के देवता श्रीबालाजी की लीला है। हमने निश्चिंत होकर आरती की। थोडी देर बाद, मुझे रसोईघर में काम करते करते अच्छी खुशबू आयी। मैं दौडते हुए पूजाघर गयी। देखा कि चंदन की अगरबत्ती जल रही है। कुछ देर बाद मेरी बेटीने मुझे बताया कि दिये में फिर से घी और बाती आ गयी है। हमने भगवान आरती की। जैसे मुझे सपनेमें बताया गया था वैसे श्रीमान नारायण, स्वयं हमारे घर में आ गये है। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा।

सप्टेंबर ६, २०१०: एक सुबह हम उठे तो बिस्तर में अक्षताएँ बिखरी थी। बडी सावधानी से हमने वो सारी उठाकर एक पोटली में रख दी। हर रोज की तरह स्नान करके मैं भगवान की पूजा कर रही थी, उनका नामस्मरण कर रही थी। इतने में भगवान की फोटो में मुझे दैदिप्यमान प्रकाश दिखाई दिया। उसके तेज को सहन नही कर पायी और मैंने आँखे बंद कर ली। उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ याद नही। जब मैंने आँखे खोली तो देखा, मेरे पती मुझे जोर जोर से मेरा नाम लेकर जगाने की कोशिश कर रहे थे। मुझे लगा की मैं शायद बेहोश हो गयी थी। उठकर जब शिशे में देखा तो फिर से नामालु चेहरे पर आया हुआ था। इस बार मैं मेरा मुँह देखकर डर गयी क्यों कि नामालु के साथ उसपर गहरे लाल रंग का कुमकुम भी आया था। फिर मेरे पती ने मुझे बताया कि मुझ में भगवान आये थे। मेरी आवाज पुरूषों जैसी हो गयी थी। बार बार मैंने पती से पूछा "क्या सचमुच ऐसा हुआ? मुझे कुछ याद क्यू नही आता?" उसी दिन दोपहर में १ बजे हम बाहर गये। शाम को ६ बजे घर लौटे। हमने देखा घर में बत्तियाँ जल रही है। पूजा की थाली सजी हुई है, दिये में घी के साथ बाती भी रखी हुई है। तीर्थ (दूध में चीनी मिलाकर) भी तैयार है।

सप्टेंबर ७, २०१०: आज भगवान की फोटो से हल्दी आना शुरू हुआ। सुबह की पूजाके वक्त, फोटो के पास तो कोई हल्दी नही रखी थी। दोपहर को १२:३० बजे मैं मेरी बेटी के साथ सफाई करने के लिये पूजाघर गयी। मेरी बेटी कहने लगी "माँ, भगवान की फोटो से हल्दी आ रही है"। पहले मुझे लगा घर में जो हल्दी है वो वहाँ आ रही होगी। पर घर में तो मैं ने इतनी हल्दी लाई नही थी। रसोईघर में मेरे डिब्बे में देखा तो हल्दी पर ॐ और स्वस्तिक के निशान थे। मैंने तुरंत पती को दिखाये। उसने निशानों के

फोटो खिंचे। जो हल्दी भगवान के फोटो पर आ रही थी उसे अलगसी मनभावन खुशबु थी। मेरा घर उस अद्‌भुत खुशबु से भर गया। उस दिन घर आये मेहमानों को भी खुशबु आयी। शाम को रोज की तरह आरती की थाली सजी हुई थी, दियेमें घी के साथ बाती तैयार थी।

सप्टेंबर ८, २०१०: आज भगवान की फोटोसे और अधिक हल्दी आयी। दूध में शहद मिलाकर चांदी का बाऊल भी तैयार था। जब से ये सारे चमत्कार घर में होने लगे तबसे हम दिन में तीन बार नैवेद्य अर्पण करने लगे। नैवेद्य से पहले हमारी बेटी नेहा भी खाना नही खाने लगी।

सप्टेंबर ९, २०१०: आज भगवान के फोटो से ढेर सारी हल्दी आयी। भगवान के मुखमंडल तक पहुँच गयी। उसपर नरसिंह स्वामी के निशान भी थे। आज भगवान ने हमे नरसिंह स्वामी के रुप में दर्शन दिये। हमने आज कुछ लोगों को बुलाया था। उनमें से किसी को निशान में श्री वेंकटेश्वर दिखाई दिये, किसी को भगवान कृष्ण, किसी को नरसिंह स्वामी तो किसी को ॐ कार दिखाई दिया। जो जिस रुप को पूजते थे वैसे उनको दर्शन हुआ।

इसी दिन मुझे और एक अद्‌भुत घटना देखने मिली। जो लोग हमारे घर आये हुए थे, उन्हे भी ये दिखाई दिया। अब तक, फोटोसे हल्दी आना, दिये में घी के साथ बाती आना, आरती की थाली सजना ऐसी भगवान की लीलाएँ हमने देखी। अभी जो मैं बताने जा रही हूँ वो मन को शांति देनेवाली घटना है। आये हुए सभी लोगों को विस्मित कर गयी।

आज मेरे पती मुझ से पहले उठे और मेरा चेहरा देखकर घबरा गये। जल्दी से मुझे उठाया, पूछने लगे, "तुमने ये चेहरे पर क्या लगाया है?" मैंने उठकर शिशे में देखा, पूरे चेहरे पर हल्दी का लेप लगा हुआ था, माथे पर एक रुपये के सिक्के के जितना बडा कुमकुम था। वो कुमकुम धीरे धीरे बढ रहा था। इस बात ने मुझे भी सोच में डाल दिया, मुझे क्या हो रहा है?। शाम को हमारे कुछ मित्र उनके परिवार के साथ भजन करने के लिये घर आ गये। जब वे भजन गा रहे थे, मैं ने अपनी आँखे बंद कर ली, आँखों के सामने श्री पद्मावती के साथ श्री वेंकटेश्वर थे। ये देखकर मैं सुबह मेरे चेहरे पर आये हुए हल्दी, कुमकुम का महत्त्व जान गयी। उस हल्दी और कुमकुम ने मुझे दिव्य दर्शन सहने की शक्ती दी थी। आम लोगों में ये शक्ती नही होती है। भगवान और देवी माँ को मुझे इस अलग शक्ती का वरदान पहले देना पडा, उसे पाकर मैं उनके दैदिप्यमान रुप को देख सकूँ। ये हमारा सबसे बडा सौभाग्य है।

इसी दिन हमने चीनी दूध में मिलाकर उसका नैवेद्य अर्पण किया। सबके सामने चीनी का शहद बन गया। आये हुए सभी लोग ये चमत्कार देखकर बहुत खुश हुए और अपने आप को खुशनसीब मानकर घर लौटे।

सप्टेंबर १०, २०१०: रोज की तरह आज भी मैं स्नान करके पूजाघर में गयी। भगवान की तस्वीर के सामने जमी हुई हल्दी ने गणेशजी का आकार लिया था। आज भी कमरे के सारे दिये जलाये हुए थे। आरती की थाली सजी हुई थी, दिये में घी के साथ बाती भी रखी हुई थी। पूजा की सारी तैयारी हो चुकी थी। भगवान ने गणेशजी के रुप में दर्शन दिया। उस दिन आये हुए लोगोंने आश्चर्य से कहा, "विनायक चतुर्थी के पहले ही विनायक आपके घर आये"। भगवान की लीला अगाध है। इन लीलाओं को समेटने के लिये सहस्त्र नयन भी कम है।

सप्टेंबर ११, २०१०: आज भी घर में रोशनी थी। आरती की थाली सजी हुई थी, दिये में घी के साथ बाती थी। मैं जब उठी तो चेहरे पर फिर से हल्दी, कुमकुम लगा था। ये देखकर मैं बहुत खुश हुई, लगा आज फिर से मुझे दिव्य दर्शन होगा। भगवान को निम्बू-चावल और दही-चावल का नैवेद्य अर्पण किया। कुछ देर बाद जब पूजा घर में लौटे तो दोनो चावल का मिश्रण हुआ था। यही हमारा भोजन था।

आज हमारे यहाँ थोडे लोग आये हुए थे। उनमें से एक श्रीमतीजी को इन चमत्कारों पर विश्वास नही था। वे बोली, "भगवान तो सिर्फ पत्थर की मूर्ती है, उसे हम अपनी इच्छाएँ पूरी करनेके लिये कहते है। ये तो तुम्हारी केवल कल्पना है कि भगवान तुम्हारे घर में आये है"। फिर उसने मुझे एक घंटे में सौ सवाल

पूछे और मैं ने बडे धीरज के साथ उन सारे सवालों के जवाब दिये। उसने थोडे फूल लाये थे, वो मैं ने भगवान के सामने रख दिये। प्रसाद लेकर वे चली गयी। इसके बाद और कुछ लोग आये। हम इन्हे थोडे सालों से जानते थे। मैं समझी ये लोग चमत्करों को सिर्फ जाँचने आये है। कुछ समय बिताकर वे प्रसाद लिये बिना ही चले गये। उस शाम मेरे पती, बेटी के साथ हमारे दोस्तों के यहाँ खाने पर गये थे। मैं बेचैनी से दिव्य दर्शन की राह देख रही थी।

इतने में, जो श्रीमती हमारे घर आकर प्रसाद लिये बिना चली गयी थी, उनका मुझे फोन आया। वे बोली, "बालाजी और पद्मा नाम के एक श्रीमान-श्रीमतीजी आप के घर आना चाहते है। मैंने उनको आप के घर का पता और फोन दिया है। अगर उन्हे घर ढुँढने पर दिक्कत आयी तो वे आपको फोन करेंगे"। मैंने हाँ भरी। अभी भी मैं भगवान के दिव्य दर्शन की आतुरता से राह देख रही थी। तभी बालाजी और पद्मा मेरे घर पर आये। मैं ने उनका स्वागत किया, उनको पूजाघर ले गयी। उन्होने भगवान को देखा, कहा, "तुम बहुत खुशनसीब हो। भगवान की तुम पर पूरी कृपा है"। मैंने दिया हुआ प्रसाद भावपूर्ण मन से उन्होने स्वीकार किया। कुछ देर रुककर फिर से किसी दिन आने का वचन देकर चले गये। उनके जाने के बाद फिर से मेरे सौभाग्य से मुझे दिव्य दर्शन का लाभ हुआ। तब तक मेरे पती घर लौटे। मैं ने उनको बालाजी और पद्मा के बारे में सब कुछ बताया। ये भी बताया कि जो श्रीमती जी प्रसाद लिये बिना ही चली गयी थी, उसीने उन्हे यहाँ भेजा था। मेरे पती पूछने लगे, "जो स्वयं इन चमत्कारों पर विश्वास ना रखतीहो, वे कैसे किसी को हमारे घर भेज सकती है?" जब मेरे पती ने ये बात नही उठायी, तब तक मेरे मन में ये आशंका आयी नही थी। अब मेरे मन में एक सवाल उठा, मुझे दिव्य दर्शन बालाजी और पद्मा आने से पहले क्युँ नही हुआ? मुझे इसका जवाब जानना जरुरी लगा। हमने उस श्रीमती जी को फोन करके बालाजी और पद्मा के बारे में पूछा। उसने सिधा इंकार किया। उसने किसीको भी हमारे घर नही भेजा था। फोन भी नही किया था। उसके दूर दूर तक के रिश्तेदारों में ऐसे नाम का कोई नही था।

अब मैं समझी, वे और कोई नही बल्कि स्वयं भगवान ही थे, जिन्हे मैं पहचान नही सकी। मैं बहुत निराश हो गयी। उन्हे ना पहचानने की भूल मैं पहले (२००५ की तिरुमला की यात्रा में मिले हुए बुजुर्ग श्रीमान-श्रीमती) भी कर चुकी थी। आज फिर वोही गलती मैं ने दोहरायी थी। साश्रुपूर्ण नयनों से मैं ने भगवान से पूछा कि ये कैसी परीक्षा है।

रात के ११ बजे हमने पूजाघर का दरवाजा बंद किया और बाहर कमरे में टीवी देखने लगे। नींद आने पर सोने से पहले एक बार भगवान का दर्शन लेने हम पूजाघर में गये। ११:३० बज चुके थे। पूजाघर में श्री बालाजी और पद्मावती के मूर्ती से शहद बह रहा था। बडा कल्पनातीत दृश्य था। मेरे पती तो अचंबित ही हो गये। हमने तुरंत उसके फोटो और फिल्म ले ली। देवर, देवरानी को स्काईप (इंटरनेट) पर आने के लिये कहा। उन्होने ये अद्भुत चमत्कार वेब कॅमेरे से देखा। उनकी खुशी का तो ठिकाना ही नही रहा। और एक बात मैं ने देखी, जो फूल विश्वास ना रखनेवाली श्रीमतीजी ने लाये थे, जिन्होंने मुझे हर तरह के सवाल पूछे थे, वो दूसरे कोनेमें उछाले हुए थे। ये देखकर हमने तय किया कि जो भगवान पर विश्वास रखते हो, उन्हीके फूल भगवान को चढायेंगे। हर दिन अविस्मरणीय यादें और अद्भुत अनुभव पीछे छोड के जा रहा था।

सप्टेंबर १२, २०१०: आज हल्दी के ऊपर कुमकुम आने लगा। शहद भी बह रहा था। हमने नैवेद्य अर्पण किया। कुछ देर बाद देखते है तो क्या आज भगवान ने नैवेद्य ग्रहण नही किया था। शाम को हमने भुने हुए टिंडोरा चावल के साथ मिलाकर उसका नैवेद्य किया। थोडी देर बाद, जब पूजाघरमें गये तो देखा उस चावल और टिंडोरा का बडा सा लड्डू बना के रखा था। हमने वो सारे आये हुए भक्तों में बाँट दिया।

सप्टेंबर १३, २०१०: आज सुबह हमने भगवान को काजू-बदाम-किशमिश का नैवेद्य अर्पण किया। भगवानने आधे खाये और आधे हमारे लिये रखे। आज भी आरती की थाली सजी हुई थी, दिये में घी के साथ बाती रखी थी। मैं मेरी बेटी को स्कुल छोडकर घर आयी। मेरे पती से फोन पर बातें करते करते मैं रसोईघर में खाना बना रही थी। उतने में मुझे पायल की आवाज सुनाई दी। तुरंत मैं ने पती को फोन पर

ये बात बतायी और पूछा कि अगर उसे वो सुनाई दे रही है या नही। पर उसे फोन पर वो आवाज नही सुनाई दी। मैं ने व्हिडिओ फिल्म ली और स्काईप पर देवर, देवरानी को दिखाई। तब उनको और मेरे पती को वो आवाज सुनाई दी। तब तक मैं सोच रही थी कि वो आवाज सुनाई देना क्या मेरे मन का खेल था। अब मैं बहुत खुश हुई कि मेरे मन का खेल नही था मैंने सचमुच देवी के नृत्यकी आवाज सुनी थी।

मेरी बेटीने और मैंने वो पायल की मीठी आवाज फिर से सुनी। लगभग ५ मिनिट वो चल रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे देवी माँ पायल पहनकर घर में चल रही है। उस रात मेरे पती को भी ये दैवी आवाज सुनने का भाग्य मिला।

सप्टेंबर १४, २०१०: शहद अभी भी बह रहा है। हमने वो उस दिन घर आये हुए दोस्तों को, मेहमानों को और भक्तों को तीर्थ के रुप में दिया।

सप्टेंबर १५, २०१०: आज कुमकुम ज्यादा पैमाने में आया हुआ दिखाई दिया। शहद जिस बाऊल में संचित हो रहा था, वो पूरा भर गया और हमे दूसरा रखना पडा।

सप्टेंबर १६, २०१०: हमने आज नैवेद्य में सेब रखा। जब वापस आकर पूजा घर में गये तो देखा भगवान ने सेब का एक भाग खाया था।

सप्टेंबर १८, २०१०: आज हल्दी और कुमकुम में भगवान की फोटो जो पूरी ढक गयी वो थोडी कम हुई थी। उससे भगवान का मुख और मुकुट दिखाई देने लगा। पहले से वो कई ज्यादा तेजस्वी दिख रहा था। हमने वो हल्दी, कुमकुम घर आये हुए भक्तों में बाँटना शुरू किया। स्वामीजी और देवी माँ के मूर्तिओंसे बहनेवाली शहद तो थमने का नाम ही नही ले रही थी। बीच में १० मिनिट बडी तेज धारा से बहा। दोपहर में हमने दाल-चावल की खिचडी नैवेद्य में रखी। बाहेके कमरे में जाकर टीवी देखते १५ मिनिट हुए ही थे तब वही खिचडी का मेरे मुँह में छोटा निवाला आया। अंदर जाकर देखा तो भगवान में भी खिचडी खायी थी। *(हमारे वेब साईट पर सप्टेंबर १८, २०१० की फोटों में आप ये देख सकते है।)*

सप्टेंबर १९, २०१०: आज जो सेब नैवेद्य में रखा था, उसका एक टुकडा भगवान के खाया और दूसरा मुझे खिलाया। जो मुझे खिलाया वो मेरी मुँह में आया। मैं उसा वक्त रसोईघर में काम कर रही थी। तुरंत मैंने मेरे पती को ये बात बताई। उसने झट से पूजाघर में जाकर देखा कि सेब से दो टुकडे चबाये हुए दिख रहे थे।
शाम को फलों का रस नैवेद्य में रखा। थोडी देर बाद देखा तो बाऊलमें थोडासा रस ही बचा था। इससे ये साफ हो रहा था कि भगवान ने हमारा नैवेद्य स्वीकार किया था। बचे हुए रस को हमने प्रसाद समझकर भक्तीभाव से पिया। शहद का बहना आज भी अखंडित है।

सप्टेंबर २०, २०१०: आज हमने चावल और भुने हुए टिंडोरा नैवेद्य में रखे। कुछ देर बाद जब पूजाघर गये तो चावल और टिंडोरा मिलाके उसके चार लड्डू बनाकर थाली में रखे थे। शाम को रोटी के साथ चने का नैवेद्य किया। इसका भी भगवान ने बडे प्यारसे स्वीकार किया। बची हुई रोटी और चने हमने खाये। हर दिन भगवान हमे उसकी लीलाएँ दिखा रहे है। शहद का बहना अभी भी जारी है।

सप्टेंबर २१, २०१०: आज हमने चावल और दाल-पालक की सब्जी का नैवेद्य अर्पण किया। कुछ देर बाद जब देखा तो सब्जी चावल में मिली हुई थी। थोडे चावल भगवान ने खाये थे। आरती की थाली में दिया था, उसमें घी के साथ बाती भी थी। दूधमें शहद मिलाकर चांदी का बाऊल भी तैयार था। इन सारे अद्भुत चमत्कारों से भगवान कलियुग में अपना अस्तित्त्व मनुष्य को दिखा रहे है। बडे सौभाग्य की बात है कि उसके लिये उन्होने हमारा घर चुना।

सप्टेंबर २२, २०१०: आज दाल फ्राय और चावल नैवेद्य में थे। कुछ देर बाद हम पूजाघर में गये तो दाल और चावल मिले हुए थे। उसमें से थोडा हिस्सा भगवान ने खाया था। शाम को हमने अंगूर भगवान

के सामने रखे। हम भोजन ले रहे थे, तो एकदम से कुछ अंगूर मेरे मुँह में आये। पूजाघर में जाकर देखा तो वहाँ सिर्फ दो ही अंगूर बचे थे।

सप्टेंबर २३, २०१०: आज भी हमने अंगूर का नैवेद्य भगवान को अर्पण किया। उनमें से फिर मेरे मुँह में अंगूर आये। मेरे पती के दोस्त हमारे घर आये थे। उनके आने से कुछ देर पहले शहद की धारा बडी हो गयी थी। जब मेरे पती शहद की फिल्म ले रहे थे, उन्होने देखा, आरती की थाली में जली हुई बाती फिर से जलने लगी। उसका प्रकाश भी ज्यादा तेजस्वी था। ये अकल्पित दृष्य दिखाने के लिये उन्होने तुरंत मुझे और बाकी सब को पूजाघर में बुलाया। ऐसे अद्‌भुत लीलाओं को देखकर दोस्तलोग भी अपना सौभाग्य समझकर खुश हुए।

सप्टेंबर २४, २०१०: आज सुबह और दोपहर में जो भी नैवेद्य रखा था उसे भगवान ने नही खाया। शाम को हमने किशमिश रखे और बाहर गये। लगभग हम घर से ५ किलोमीटर की दूरी पर थे। अचानक से मेरे मुँह में किशमिश आये। अब तक तो सब चमत्कार घर में हो रहे थे। पहली बार घर के बाहर हमे ये अनुभव आया। मैं तो खुशी से नाच उठी।

सप्टेंबर २५, २०१०: आज मैं जब पूजाघर में गयी तो आरती की थाली सजी हुई थी, दियेमें घी के साथ बाती लग चुकी थी, दूध में शहद मिलाकर तीर्थ भी तैयार था। हम सबने मिलकर पूजा की। सप्टेंबर ४ को मैंने चंदन की पावडर में पानी डालकर गंध बनाया था। आज तक वो सुखा नही है। जैसे ही पूजा खतम हुई, मैंने देखा कि मेरे माथे पर टिका लगा हुआ था। वो कुमकुम नही था, वो गंध था। मेरी गर्दन पर उसी गंध से नामालु आया था। इसके बाद मेरे पती हमारी बेटीके साथ बाहर के कमरे में खेल रहे थे और मैं रसोईघर में काम कर रही थी। अचानक से पूजाघरमें तीन चंदन की अगरबत्तियाँ जलने लगी। उसकी खुशबु से सारा घर कुछ ही मिनिटोंमें महक उठा। सब्जियाँ मिलाये हुए चावल आज नैवेद्य में थे। भगवान ने ये नैवेद्य खा लिया। उसी दिन शाम को आरती की थाली सजी थी, दिये में घी के साथ बाती थी। पूजा की सारी तैयारी थी। हमने काले अंगूर का नैवेद्य अर्पण किया पर भगवान ने नही खाया।

सप्टेंबर २६, २०१०: आज सुबह और दोपहर का नैवेद्य भगवान ने नही स्वीकारा। शाम को कुछ फल भगवान के सामने रखे, उनसे फल खाने के लिये प्रार्थना की और घर से बाहर निकले। घर से ४-५ किलोमीटर दूर गये नही तब मेरे मुँह में अंगूर आये। घर जाकर देखा तो नैवेद्य के फलों में से अंगूर कम हुए थे।

सप्टेंबर २७, २०१०: आज हमने भगवान को कुछ सेब अर्पण किये। भगवान ने एक टुकडा खाया और एक मेरे मुँह में एक आया। शाम को हमने कुछ केले रखे। एक तृतीयांश केला मेरे गले से बाहर आया। इस केले को कही भी दाँत नही लगे थे। वैसा ही था जैसे हम छिलके से निकालते है। पूजाघरमें जाकर देखातो एक तृतीयांश केला वहाँ नही था। बचे हुए केले के बायें बाजू में एक शहद का बूँद था।

पिछले तीन हफ्ते से भगवान की मूर्ती से शहद का बहना लगातार चल रहा है।

ऑक्टोबर १०, २०१०: आज हमने भगवान के सामने सेब रखा। उसके बाद मैं रसोईघर में खाना पकाने में व्यस्त हो गयी। अचानक से पूजाघर से मुझे मीठी महक आने लगी। अंदर जाकर हमने जो देखा उसपर विश्वास रखना कठीन था, सपने में भी हम ये बात नही सोचते। सेब तो वैसे का वैसे था, पर उसके बाजू में तिरुपती का लड्डू था। हमने तिरुपती का लड्डू पहले कई बार खाया है। पर इतना गर्म लड्डू पहले कभी नही खाया था। हमारी ऊंगलियों पर लगा हुआ घी साफ साफ नजर आ रहा था। रुचि की बात तो पूछिए मत।

****

मेरे जैसी सामान्य, घरेलु औरत के लिये ये पुस्तक "श्री बालाजी की लीलाएँ" लिखना कोई आसान बात नही थी। कलियुग के देवता श्रीवेंकटेश्वर और देवी पद्मावती की आशिर्वाद से ही संभव हो पाया है।

मेरे पती ऋषिकेश ने ये पुस्तक लिखने के लिये प्रोत्साहित किया। स्वयं उन्होने इस पुस्तक का इंग्लिश में अनुवाद किया। मैं मेरी बेटी नेहा का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ। श्री वेंकटेश्वर व्रत के लेखक श्री. तिम्मुराज विश्वपति रामकृष्ण मुर्ति के मनःपूर्वक आभार मानती हूँ। मैं भगवान से यही प्रार्थना करना चाहती हूँ कि जिन जिन लोगों ने ये पुस्तक बनाने में मेरी सहायता की, मेरी बाते ध्यान से सुनी, उनपर आपकी कृपा बनी रहे। मेरी सहृदय सदिच्छा है, जो कोई ये व्रत भक्ति से संपन्न करेगा उसे भगवान की कृपा का लाभ जरूर होगा।

ललिता ऋषिकेश

श्री वेंकटेश्वर मंत्र

कलियुग के देवता, स्वयं श्री वेंकटेश्वरने वेदों में से कुछ मंत्र मुझे बताये है। उनमें से ये मंत्र हर रोज पूजा के वक्त पढने से सच्ची भक्ति पाने के लिये मदद करेगा।

मुरारिसेवक जरादिपीडित निरार्थिजीवन निराश भूसुर
वरातिसुन्दर सुरांगनारति करांगसौष्ठव कुमारताकृति
कुमार तारक समापनोदय तनूनपातक महापदामय
विहापनोदित सकलभुवन विदित कुमारधाराभिधान तीर्थादिष्टितस्य
धरणीतल गत सकल हतकलिल सुभासलिल गतबहुल
विविधमलः अतिचतुर रुचिरतर विलोकनमात्र विदलित
विविधमहापातक स्वामीपुष्करिणि समेतस्य

जो भक्त इस मंत्र का हर रोज पठन करेगा, वो आरोग्यपूर्ण और समृद्ध जीवन व्यतित करेगा।

ललिता ऋषिकेश

कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी

पूजा की सामग्री

६ नारियल – १ कलश के लिये और ५ पाँच अध्यायों के लिये
१ वस्त्रम् (रुई का बना हुआ हार), १ कलश , १ नये प्लेन कपडे का टुकडा (लगभग एक मीटर)
हल्दी और कुमकुम, अक्षता, अगरबत्ती, कर्पूर (आरती के लिये)
बिडे के पान या आम के पत्ते (३ – ५ कलश के लिये, २ विनायक की पूजा के लिये)
फूल, तूलसी, पंचामृत (दूध, दही, घी, मध और चीनी)
गणेश के नैवेद्य के लिये छोटा गुड का टुकडा
व्रत के नैवेद्य के लिये गेहूँ का रवा, घी, पिसी हुई चीनी, केला, पिसी हुई इलायची। रवा घी में भूनकर ठंडा होनेपर उसमें केले के टुकडे, चीनी और इलायची डाले। ये रवा दुध या पानी में **नही** पकाया जाता।

व्रत की विधी

श्री तिम्मुराज विश्वपति रामकृष्ण मुर्ती द्वारा

कलियुग में श्री बालाजी की कृपा पाने के लिये इस व्रत को संपन्न करना अत्यंत आसान है। इस व्रत को संपन्न करने के तुरंत बाद सभी कष्ट दूर हो जाते है। इस व्रत की विधी अत्यंत सरल है, जिसे मुझे वैकुंठवासी नारायण जी ने स्वयं बतायी है। कोई भी व्यक्ति, कही भी, कभी भी इस व्रतको संपन्न कर सकता है। आर्थिक कठिनाईयाँ हो, या स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या हो, मन अशांत हो या अन्य कोई भी कारण हो, इस व्रत के संपन्न से ही कष्ट दूर हो जाते है। यदि आपने अपने घर में कोई शुभ कार्य करने का निश्चय किया हो, तब भी इस व्रत को संपन्न कर सकते है। नौकरी और व्यापार में उन्नति के लिये भी व्रत संपन्न करने से तुरंत फल की प्राप्ति होती है।

इस व्रत को संपन्न करने के दो विधान है।

प्रथम विधान

इस व्रत को पहले बताये अनुसार किसी भी समय संपन्न कर सकते है। मुख्य रूप से मार्गशीर्ष, माघ, कार्तिक महिनों में पूर्णिमा, पंचमी, सप्तमी, एकादशी तिथियों में, श्रवण, स्वातीनक्षत्रों में इसे संपन्न करना अच्छा होता है। सवेरे हो या शाम, इस व्रतको संपन्न कर सकते है।

इस व्रत में पाँच अध्याय है। पहला अध्याय साक्षात् श्री बालाजी की कृपा से लिखा गया है। अन्य चार अध्याय महा तपस्वी श्री विश्वामित्र, वसिष्ठ, भरद्वाज, और अत्रि महामुनियों के द्वारा बताया गया है। अपने स्वगृह में हो या निवास स्थान में, भगवान का मंदिर हो या अन्य कोई भी पवित्र स्थान, नदी तट पर भी इसे संपन्न कर सकते है।

यदि संभव हो सके तो अपने बंधु-मित्रों के साथ इसे संपन्न करे। सबसे पहले जिस जगह पर आप करना चाहते है उसे साफ करे। उसके बाद मंडप तैयार करके उसमें श्री बालाजी की तस्वीर रखे। श्रीदेवी, भूदेवी के साथ बालाजी की तस्वीर को रखना श्रेष्ठ होगा। तस्वीर के साथ एक रुपये का सिक्का रखे। उसके बाद कलश की स्थापना करे।

सर्वप्रथम हल्दी से बने के गणेश की पूजा करनी चाहिये ताकि व्रत बिना किसी विघ्न के संपन्न हो सके। बाद में व्रत कथा के पाँच अध्याय पढे। स्वयं भगवान कहते है कि जो व्यक्ति निष्ठा और भक्तिसे इसे संपन्न करता है, वहाँ भगवान स्वयं किसी ना किसी रुप में आकर प्रसाद स्वीकार करते है।

बालाजी को तुलसी दल अति प्रिय है। इसी लिये पूजामें तुलसी दलों को रखना श्रेष्ठ होगा।व्रत संपन्न होने के बाद तुलसी दलों को प्रसाद के रुप में स्वीकार करने से रोगनिवारण होने के साथ साथ अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है। व्रत की समाप्ति पर नारियल समर्पित करके, उनके टुकडे बनाकर प्रसाद के रुप में भगवान को समर्पित करने से, वहाँ उपस्थित सभी लोगों को देकर फिर उसे स्वीकार करने से पुण्य प्राप्त होता है।

इस व्रत को विधीपूर्वक कलश स्थापना के साथ विस्तार से संपन्न करे। अगर संभव न हो तो द्वितीय विधान के अनुसार भी कर सकते है।

द्वितीय विधान

साक्षात् भगवान ने एक और मुख्य बात ये भी बताई है कि यदि किसी कारण, कोई समस्या हो और व्रत करने के लिये समय न मिले या किसी कारणवश संभव न हो रहा हो तो अकेले बैठकर भी इस व्रत को संपन्न किया जा सकता है। श्री बालाजी के मंडप के सामने बैठकर सबसे पहले गणेश जी की प्रार्थना मन ही मन करे। फिर अष्ट दिक्पालकों, नवग्रह देवताओं का मन ही मन नमन करे। तुलसी दल, नारियल, उपलब्ध फल-फूल थाली में रखे। बालाजी को स्मरण करते हुए व्रत कथा का मन ही मन पठन करे। नारियल भगवान को अर्पित करे। इसे प्रसाद के रुप में स्वीकार करने से सभी कष्ट तुरंत दूर हो जाते है।

हर कथा के अंत में नारियल समर्पित करे। महाप्रसाद के रुप में गेहूँ का रवा (दलिया), चीनी डालकर हलवा जैसे बनाये। उसके ऊपर केला भी रखे। हर कथा के अंत में गोविंद...गोविंद...गोविंद... तीन बार कह कर प्रार्थना करे।

एक बात हम सभी को याद रखनी चाहिये, हमारी जो भी समस्याएँ है वे जितना भगवान जानते है और कोई नही जान सकता है। इसीलिये उस करुणामय की प्रार्थना कर, संकल्प कर, व्रत संपन्न करने से मनोकामना निश्चित ही पूरी हो जाती है। सभी कष्ट दूर होकर अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

समस्त सन्मंगलानिभवंतु
श्री लक्ष्मी श्रीनिवास कटाक्ष सिद्धिरस्तु

श्री वेंकटेश्वर व्रत कथा

श्रीगणपती ध्यानम्

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नम् कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।
शुक्लांबरधरम् विष्णुम् शशिवर्णम् चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनम् ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये ॥
तदेव लग्नम् सुदिनम् तदेव ताराबलम् चंद्रबलम् तदेव ।
विद्याबलम् दैवबलम् तदेव लक्षीपते तेंघ्रियुगम् स्मरामि ॥

आचमनम्

ॐ केशवाय स्वाहा । ॐ नारायणाय स्वाहा । ॐ माधवाय स्वाहा ।
ॐ गोविंदाय नमः । ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसुदनाय नमः।
ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः।
ॐ हृषिकेशाय नमः। ॐ पद्मानाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः।
ॐ संकर्षणाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः।
ॐ अनिरुध्दाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः।
ॐ नरसिंहाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ जनार्दनाय नमः।
ॐ उपेंद्राय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ श्रीकृष्णाय नमः।

भूतोच्चाटनम्

उत्तिष्टंतु भूतपिशाच्चा: एते भूमिभारका:।
ऐतेशामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥

प्राणायामम्

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ सुवः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्, ॐ तत्सवितुर्-वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि, धियो य़ो नः प्रचोदयात्, ॐ आपो-ज्योतिः-रसोवृतम् ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

मम उपात्त दुरिताक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् शुभे शोभन मुहुर्ते श्री महाविष्णोः आग्नया प्रवर्ते मानस्य आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्थे श्वेत वराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे कलियुगे प्रथमपादे जम्बूद्वीपे भरतवर्षे भारत खन्डे मेरोः दक्षिण दिग्भागे, श्रीशैलस्य, ...(जहाँ पूजा कर रहे है उस गाँव का नाम) ....प्रदेशाय, कृष्णा, गोदावरी मध्यभागे, स्व-शोभन गृहे, समस्त देवता ब्राह्मण, हरिहर सन्निधौ, अस्मिन् वर्तमान व्यवहारिक चान्द्रमानेन स्वस्तिश्री प्रभवादि नाम संवत्सर मध्य संवत्सरे, अयने, ऋतौ, ..(आज का महिना) . . .मासाय, ...(शुक्ल या कृष्ण) .पक्षाय, ..(आज की तिथी) ..तिथौ, ..(आज का दिन) ..वासरे, शुभनक्षत्रे, शुभयोगे, शुभकरण एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् शुभतिथौ श्रीमान. . (अपना और परिवार के सभी सदस्यों के नाम) . . गोत्रः. (अपना गोत्र) . . . नामधेयः धर्मपत्नी समेतस्य अस्माकम् सहकुटुंबानाम्, क्षेम, स्थैर्य, धैर्य, विजय, आयुर्-आरोग्य, ऐश्वर्य-अभिवृध्यर्थम्, धर्मार्थ काममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ फल सिद्ध्यर्थम् ममोपात्त दुरिताक्षय द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री वेंकटेश्वर देवता मड्डिष्य श्री वेंकटेश्वर व्रतकल्प करिष्ये द्रवैः संभवद्भिः पदार्थे संभवता नियमेन यावच्छक्ति ध्याना वाहनादि षोडषोपचार पूजाम् करिष्ये। *(पानी को हाथ लगायें।)*

तदंग कलशाराधनम् करिष्ये

(स्वामीजी की दायीं ओर कलश रखे, उसमे गंधम्, पुष्पम्, कुंकुम् और अक्षता डाले, फिर आगे लिखे हुए श्लोक पढे।)

श्लोकं

कलशस्य मुखे विष्णु: कांते रुद्र: समाश्रिता:।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाश्रित:॥
कुक्षौतु सागरा सर्वे सप्तद्वीप वसुंधरा ।
ऋग्वेदोत यजुर्वेद: सामवेदोह्यथर्वणा: ।।
अंगैश्च सहिता: सर्वे कलशांबु समाश्रिता:।
कलशे गंधपुष्पाक्षताम् निक्षिप्य, हस्तेनच्चाद्य ॥
आपो वा इदम् सर्वं विश्वभूतान्याप: प्राणवा आपा: ।
पश्व: आपोन्नामापोमृता मापा: सम्रादपो विराडापा ॥
स्वराडापश्चंडाम् स्यापो ज्योतिम् श्यापो यजोमश्याप ।
सस्त्यामाप: सर्वा देवता आपोभूर्भुवसुव राप ॐ ॥

(कलश में पानी भरें और उसमें तुलसी के पत्ते डालें।)

श्लोकं

गंगे च यमुने च कृष्णे गोदावरी सरस्वति ।
नर्मदे सिंधु कावेर्यो जलेस्मिन् सन्निधिम् कुरु ॥
कावेरी तुंगभद्रा च कृष्णवेणी च गौतमी ।
कलशोदेकेन देवात्मानम् पूजाद्रव्यानि च सम्प्रोक्ष्या॥

(कलश में एक फूल डुबोकर उससे स्वामीजी पर, पूजा की सामग्री पर और आप पर पानी छिडके ।)

श्री गणपती प्रार्थना

शुक्लांबरधरम् विष्णुम् शशिवर्णम् चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनम् ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतयेत् ॥
आदौ निर्विघ्नेन व्रत परिसमाप्तम् गणपती पूजाम् करिष्ये॥

अथः गणपती पूजा

ॐ गणानाम त्वागणपतीम् हवामहे । कविं कवीनामुपा मस्श्रवस्तवम् ।
ज्येष्ठराजम् ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पत । आनश्श्रुण्यनुतिभिः सीदसाधनम् ॥

श्री महागणाधिपतये नमः । ध्यायामि, ध्यानम् समर्पयामि ॥

आवाहयामि, रत्नसिंहासनम् समर्पयामि, पाद्यौ पाद्यम् समर्पयामि,
हस्तौः अर्घ्यम् समर्पयामि, मुखे आचमनीयम् समर्पयामि ॥

आपोहिष्टांयोभुवस्तान ऊर्जेध्दातन, महेरणाय चक्षसे।
यो वत् शिवत मोरसस्तस्य भाजयतेहनः उषतीरिना मातरः ।
तस्मारम् गमामवो यस्याक्षयाय जिंधव, आपोजनयाधाचनः ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥
स्नानांतरम् शुद्ध आचमनम् समर्पयामि ॥

अभिवस्त्रातु वसनान्यार शभिदेनुत्सु दुघाः पूजमानः ।
अभिचंद्रा भर्ता वे नो हिरण्याभ्यश्वनरतिनोदेव सोम ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – वस्त्रयुग्मम् समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रम् प्रजापते सहजम् यत् :पुरस्तात् ।
आयुष्यंग्रेयम् प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम् बलमस्तु तेजः ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ॥

गंधद्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टान् करिषिणीम्।
ईश्वरीम् सर्वभूतानाम् ता मिहोपव्हये श्रियम्॥

श्री महागणाधिपतये नमः – दिव्य श्री चंदनं समर्पयामि ॥

आयने ते परायणे दुर्वाः रोहंतु पुष्पिणीः ।
ह्रदाश्च पुंडरीकाणि समुद्रस्य गुहा इमे ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – दुर्वादि नानाविध पुष्पाणि समर्पयामि ॥

अथ श्री षोडषनाम पूजा

ॐ सुमुखाय नमः।
ॐ एकदंताय नमः।
ॐ कपिलाय नमः।
ॐ गजकर्णिकाय नमः।
ॐ लम्बोदराय नमः।
ॐ विकटाय नमः।
ॐ विघ्नराजय नमः।
ॐ गजाधिपतये नमः।
ॐ धुमकेतवे नमः।
ॐ गणाधिक्षाय नमः।
ॐ फालचंद्राय नमः।
ॐ गजाननाय नमः।
ॐ वक्रतुंडाय नमः।
ॐ शुर्पकर्णकाय नमः।
ॐ हेरम्बाय नमः।
ॐ स्कंदपूर्वजाय नमः।
ॐ सर्वासिध्दि प्रदायकाय नमः।
ॐ महागणाधिपतये नमः।

नानाविध परिमल पुष्पाणि समर्पयामि ॥

वनस्पत्युर्भवैः दिवैः नाना गंधैः सु सम्युतम्।
आघ्रेयः सर्वदेवानाम् धूपोयम् प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – धूपमाघ्रापयामि॥

साज्यम् त्रिवर्ती संयुक्ताम् वह्निना योजितम् प्रियम्।
गृहाणा मंगलम् दीपम् त्रैलोक्यतिमिरावहम्॥
भक्त्यादीपम् प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहिमाम नरकाद्घोराद् दिव्यज्योतिः नमोस्तुते॥

श्री महागणाधिपतये नमः – दीपम् समर्पयामि,
धूप दीपांतरम् आचमनीयम् समर्पयामि ॥

नैवेद्यम्

(गुड का छोटा टुकडा थाली में रख कर उसके सभोवताल पानी छिडके।)
ॐ भू:भूव सुव:, ॐ तत्सवितुरवरेण्यम्, भर्गो: देवस्य धीमही, धियोयोन: प्रचोदयात्।
सत्यम् त्वर्तेन परिषिंचामि (रात में "ऋतं त्वा सत्येन परिषिंचामि" ऐसे कहें)

श्री महागणाधिपतये नमः – नैवेद्यम् समर्पयामि ॥

अमृतमस्तु अमृतोवत्सरणमसि॥

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ आपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।
ॐ समानाय स्वाहा मध्ये मध्ये पानीयम् समर्पयामि ॥

अमृतापिधानमसि उत्तरापोषणम् समर्पयामि ।
हस्तौ प्रक्षालयामि, शुद्धाचमनीयम् समर्पयामि ॥
पूगीफलै: सकरपूरै: नागवल्लीदलीरयुतम् ।
मुक्ताचुर्ण समायुक्तम् तांबुलम् प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – तांबुलम् समर्पयामि ॥

ॐ गणानाम त्वागणपतीम् हवामहे । कविं कवीनामुपा मस्श्रवस्तवम् ।
ज्येष्ठराजम् ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पत । आनश्श्रुण्यनुतिभि: सीदसाधनम् ॥

श्री महागणाधिपतये नमः – सुवर्णमंत्रपुष्पम् समर्पयामि ॥

मंत्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् गणाधिप ।
यत्पूजितम् मया देव परिपूर्णं तदस्तुते ॥
यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकम् महिमान: सचंते यत्र पुर्वेसाध्या: संति देवा: ॥

पुनराचमनम्

अनया ध्यानावाहनादि षोडषोपचार पूजया च भगवान सर्वात्मक।:
श्रीमहा गणाधिपति सुप्रीतो वरदो भूत्वा उत्तरे कर्मण्य विघ्नमस्तु भवन्तो ॥
भृवन्तु उत्तरे कर्मण्य विघ्नमस्तु गणाधिपति प्रसादम शिरसा ग्रुह्णामि ।

सहस्त्रपरमा देवि शतमूला शतांकुरा ।
सर्वं हरतु मे पापं दूर्वादुस्स्वप्ननाशनी ।
गणपति यदास्थानं उद्वासयामि ॥

प्राण प्रतिष्ठा

ॐ असुनीते पुनर्स्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिहनोदेहि भोगं ज्योक्पश्येम ।
सूर्यमुच्चरन्त मनुमते मृडयान स्वस्ति अमृतं वैप्राणा अमृतमापः प्राणानेव यधास्थानमुपह्वयते ॥
(स्वामीजी की मूर्ती को हाथ लगाये ।)

श्रीवेंकटेश्वर आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि स्थिरोभव, वरदोभव सुप्रसन्नोभव, स्थिरासनं कुरु ।

ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभम् सुरेशम् ।
विश्वकारम् गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगं ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिह्रुध्यान गम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – ध्यायामि, ध्यानम समर्पयामि।

आवाहनम्

आवाहयामि देवेश सिद्धगन्धर्व सेवित । यद्रस्यमिदं पुण्यं सर्वपापहरोहरः ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेन्कटेश्वर स्वामिने नमः – आवाहयामि
(स्वामीजी के मूर्ती पर फूल, पत्ते चढाये।)

आसनम्

देव देव जगन्नाथ प्रणुत क्लेशनाशन । रत्नसिंहासनं दिव्यं गृहाण मधुसुदन ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेन्कटेश्वर स्वामिने नमः – रत्नसिंहासनं समर्पयामि
(स्वामीजी के मूर्ती पर फूल, पत्ते चढाये।)

पाद्यं

वान्चितं कुरुमेदेव दुष्कृतं च विनाशय । पाद्यं गृहाण भगवान मातुरुत्संग संस्थित ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – पादयो, पाद्यं समर्पयामि
(एक चम्मच पानी थाली में डाले।)

अर्घ्यं

कुरुष्वमे दयां देव संसारार्ति भयापह । दधिक्षीर फलोपेतम् गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि
(एक चम्मच पानी थाली में डाले।)

आचमनं

नमः सत्याय शुद्धाय नित्याय ज्ञानरूपिणे । गृहाणाचमनं देव सर्वलोकैकनायक ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – मुखे आचमनीयं समर्पयामि
(एक चम्मच पानी थाली में डाले।)

पंचामृतस्नानं

पंचामृतं मयानीतं पयोदधिघृतं मधु । शर्करा सहितं चैवदेवत्वं प्रतिगृह्यतां ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – पंचामृत स्नानं समर्पयामि
(पंचामृत गाय के दुध, दही, घी, मध और चीनी मिलाकर किया जाता है।)

स्नानं

स्वर्णपात्रोदकं गंगा यमुनादि समन्वितं । शुद्धोदकं गृहाणेश स्नानं कुरु यथाविधि ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि
(एक चम्मच पानी थाली में डाले।)

वस्त्रं

तप्तकांचन सन्काशं पीतम्बर मिदं हरे । सुगृहाण जगन्नाथ श्रीनिवास नमोस्तुते ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – वस्त्रयुग्मं समर्पयामि

यज्ञोपवीतं

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजपतेर्यत्सहजं पुरस्तात ।
आयुष्यमाग्रयाम प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – यज्ञोपवीतं समर्पयामि

गन्धं

चन्दनागरु कस्तूरि घनसार समन्वितं । गन्धं गृहाण गोविन्द नानागंधस्चधारय ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – दिव्यपरिमल गंधां समर्पयामि
(स्वामीजी के मूर्ती को चंदन लगाये।)

अक्षतां

गोविन्दा परमानन्द हरिद्रा सहितक्षतान । विश्वेश्वर विशालाक्ष गृहाण परमेश्वर ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – अक्षतान समर्पयामि
(स्वामीजी के मूर्ती पर अक्षता डाले। चावल को हल्दी, कुंकुम् लगाके अक्षता बनाते है।)

पुष्पं

सुगंधानि सुपुष्पाणि जाजीकुन्दमुखानि च । मालति वकुलादेवि पूजार्थं प्रतिगृह्यतां ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – पुष्पं समर्पयामि

अथांग पूजा

ॐ श्री वेंकटेश्वराय नमः – पादौ पूजयामि ।
ॐ श्री वेंकटचलधिशाय नमः – गुल्फ़ौ पूजयामि ।
ॐ श्री प्रदायकाय नमः – जानुनी पूजयामि ।
ॐ पद्मावती पतये नमः – जंघे पूजयामि ।
ॐ ज्ञानप्रदाय नमः – ऊरू पूजयामि ।
ॐ श्रीनिवसाय नमः – कटिं पूजयामि ।
ॐ महाभागाय नमः – नाभिं पूजयामि ।
ॐ निर्मलाय नमः – उदरं पूजयामि ।

ॐ विशालहृदयाय नमः – हृदयम पूजयामि ।
ॐ परिशुद्धात्मने नमः – स्तनौ पूजयामि ।
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः – भुजौ पूजयामि ।
ॐ स्वर्णहस्ताय नमः – हस्तौ पूजयामि ।
ॐ वरप्रदाय नमः – कंठं पूजयामि ।
ॐ लोकनाथाय नमः – स्कन्धौ पूजयामि ।
ॐ सर्वेश्वराय नमः – मुखं पूजयामि ।
ॐ रसज्ञाय नमः – नासिकां पूजयामि ।
ॐ पुण्यश्रवन कीर्तनाय नमः – श्रोत्रे पूजयामि ।
ॐ पुल्लाम्बुज विलोचनाय नमः – नेत्रे पूजयामि ।
ॐ वर्चस्विने नमः – ललाटं पूजयामि ।
ॐ रम्य विग्रहाय नमः – सर्वाण्यन्गानि पूजयामि ।
ॐ श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – दिव्यसुन्दर विग्रहं पूजयामि ।

श्री वेंकटेश्वर अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ वेंकटेशाय नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ लक्ष्मीपतये नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ अमृतांशाय नमः
ॐ जगद्वंद्वाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ शेषाद्रि-निलयाय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ मधुसुदनाय नमः
ॐ अमृताय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ कृष्णाय नमः
ॐ श्रीहरये नमः
ॐ ज्ञान-पंजराय नमः
ॐ श्री वत्स-वक्षसे नमः
ॐ सर्वेशाय नमः
ॐ गोपालाय नमः
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ गोपेश्वराय नमः
ॐ परम-ज्योतिष्ये नमः
ॐ वैकुन्ठपतये नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ सुधातनवे नमः
ॐ यादवेन्द्राय नमः
ॐ नित्य-यौवनरूपवते नमः
ॐ चतुर्वेदात्मकाय नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ पद्मिनी-प्रियाय नमः
ॐ धरापतये नमः
ॐ सुरपतये नमः
ॐ निर्मलाय नमः
ॐ देवपूजिताय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ चक्रधराय नमः
ॐ त्रिधाम्ने नमः
ॐ त्रिगुणाश्रयाय नमः

ॐ निर्विकल्पाय नमः
ॐ निष्कलन्काय नमः
ॐ निरांतकाय नमः
ॐ निरन्जनाय नमः
ॐ निराभासाय नमः
ॐ नित्यतृप्ताय नमः
ॐ निर्गुणाय नमः
ॐ निरुपद्रवाय नमः
ॐ गदाधराय नमः
ॐ शारंगपाण्ये नमः
ॐ नन्दकिने नमः
ॐ शन्खधारकाय नमः
ॐ अनेकमुर्तये नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः
ॐ कटिहस्ताय नमः
ॐ वरप्रदाय नमः
ॐ अनेकात्मने नमः
ॐ दीनबान्धवे नमः
ॐ आर्तलोक भयप्रदाय नमः
ॐ आकाशराज-वरदाय नमः
ॐ योगि-हृत्पद्ममन्दिराय नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ जगत्पालाय नमः
ॐ पापघ्नाय नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ शिंशुमाराय नमः
ॐ जटामुकुट-शोभिताय नमः
ॐ शन्ख-मद्योल-सन्मंजूलाय-किन्किण्याड्य-करन्डकाय नमः
ॐ नीलमेघ-श्याम-तनवे नमः
ॐ बिल्व-पत्रार्चन प्रियाय नमः
ॐ जगद्व्यापिने नमः
ॐ जगत-कर्ते नमः
ॐ जगत-साक्षिणे नमः
ॐ जगत्पतये नमः
ॐ चिन्तितार्थ-प्रदाय नमः
ॐ जिष्णवे नमः
ॐ दाशार्वाय नमः
ॐ दश-रूपवते नमः
ॐ देवकि-नन्दनाय नमः
ॐ शौरये नमः
ॐ हयग्रीवाय नमः

ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ कन्या-श्रवणतारेज्याय नमः
ॐ पीताम्बरधराय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ वनमालिने नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ मृगयासक्त-मानसाय नमः
ॐ अश्वरूढाय नमः
ॐ खड्गधारिणे नमः
ॐ धनार्जन-समुत्सुकाय नमः
ॐ गानसारल-सन्मध्य-कस्तुरि-तिलकोज्वलाय नमः
ॐ सत्चिदानन्दरूपाय नमः
ॐ जगन्मन्गलदायकाय नमः
ॐ यज्ञरूपाय नमः
ॐ यज्ञभोक्ते नमः
ॐ चिन्मयाय नमः
ॐ परमेश्वराय नमः
ॐ परमार्थ-प्रदाय नमः
ॐ शान्ताय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ दोर्दन्ड-विक्रमाय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ परब्रह्मणे नमः
ॐ श्रीविभवे नमः
ॐ जगदीश्वराय नमः

॥ इति श्री वेंकटेश्वर अष्टोत्तर शतनामावलिः ॥

श्री महालक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ प्रकृत्यै नमः
ॐ विकृत्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः
ॐ श्रद्ध्यै नमः
ॐ विभूत्यै नमः
ॐ सुरभ्यै नमः
ॐ परमात्मिकायै नमः
ॐ वाच्यै नमः
ॐ पद्मालयायै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ शुच्यै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ सुधायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ हिरण्म्यै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ नित्यपुष्टायै नमः
ॐ विभावर्यै नमः
ॐ आदित्यै नमः
ॐ दित्यै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ वसुधारिण्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कामाक्ष्यै नमः
ॐ कमल सम्भवायै नमः
ॐ अनुग्रहप्रदायै नमः
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ अनघायै नमः
ॐ हरिवल्लभायै नमः
ॐ अशोकायै नमः
ॐ अमृतायै नमः
ॐ दीपायै नमः
ॐ लोकशोक विनाशिन्यै नमः
ॐ धर्मनिलयायै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ लोकमात्रै नमः
ॐ पद्मप्रियायै नमः

ॐ पद्महस्तायै नमः
ॐ पद्माक्ष्यै नमः
ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
ॐ पद्मोद्भवायै नमः
ॐ पद्ममुख्यै नमः
ॐ पद्मनाभ प्रियायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ पद्ममालाधरायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ पद्मिन्यै नमः
ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
ॐ पुण्यगन्धायै नमः
ॐ सुप्रसन्नायै नमः
ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ चन्द्रवदनायै नमः
ॐ चन्द्रायै नमः
ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
ॐ चतुर्भुजायै नमः
ॐ चन्द्ररुपायै नमः
ॐ इन्दिरायै नमः
ॐ इन्दु शीतलायै नमः
ॐ आह्लाद जनन्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शिवकर्त्यै नमः
ॐ सत्यायै नमः
ॐ विमलायै नमः
ॐ विश्वजनन्यै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
ॐ प्रीति पुष्करिण्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
ॐ भास्कर्यै नमः
ॐ बिल्व निलयायै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः
ॐ वसुन्धरायै नमः
ॐ उदारंग्यै नमः
ॐ हरिण्यै नमः
ॐ हेममालिन्यै नमः

ॐ धन धान्यकर्त्यै नमः
ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ स्त्रेण्य सौम्यायै नमः
ॐ शुभप्रदायै नमः
ॐ नृपवेश्म गतानन्दायै नमः
ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
ॐ वसुप्रदायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ हिरण्य प्राकारायै नमः
ॐ समुद्र तनयायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ मंगलायै नमः
ॐ विष्णुवक्षः स्थलस्थितायै नमः
ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ॐ नारायण समाश्रितायै नमः
ॐ दारिद्र्य ध्वंसिन्यै नमः
ॐ देवलक्ष्मै नमः
ॐ सर्वोपद्रव निवारिण्यै नमः
ॐ नवदुर्गायै नमः
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मिकायै नमः
ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
ॐ महालक्ष्मी अष्टोत्तर शत नमः

॥ इति श्री लक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावलिः ॥

श्री पद्मावती अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ पद्मावत्यै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ पद्मोद्भवायै नमः
ॐ करुणाप्रदायिन्यै नमः
ॐ सहृदयायै नमः
ॐ तेजस्वरूपिण्यै नमः
ॐ कमलमुख्यै नमः
ॐ पद्मधरायै नमः
ॐ श्रीयै नमः
ॐ पद्मनेत्र्यै नमः
ॐ पद्मकरायै नमः
ॐ सुगुणायै नमः
ॐ कुमकुमप्रियायै नमः
ॐ हेमवर्णायै नमः
ॐ चन्द्रवन्दितायै नमः
ॐ धगधगप्रकाश शरीर-धारिण्यै नमः
ॐ विष्णुप्रियायै नमः
ॐ नित्यकल्याण्यै नमः
ॐ कोटिसूर्यप्रकाशिण्यै नमः
ॐ महासौन्दर्यरूपिण्यै नमः
ॐ भक्तवत्सलायै नमः
ॐ ब्रह्मान्डवासिन्यै नमः
ॐ सर्ववान्चाफलदायिन्यै नमः
ॐ धर्मसन्कल्पायै नमः
ॐ दाक्षिण्यकटाक्षिण्यै नमः
ॐ भक्तिप्रदायिन्यै नमः
ॐ गुणत्रयाविवर्जितायै नमः
ॐ कलाषोडशसंयुतायै नमः
ॐ सर्वलोकानान्जनन्यै नमः
ॐ मुक्तिदायिन्यै नमः
ॐ दयामृतायायै नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ महाधर्मायै नमः
ॐ धर्मरूपिण्यै नमः
ॐ अलन्कार प्रियायै नमः
ॐ सर्वदारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
ॐ श्रीवेंकटेशवक्षस्थलस्थितायै नमः
ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ तिरुचानूरुपुरवासिन्यै नमः
ॐ वेदवैद्यविशारदायै नमः

ॐ विष्णुपादसेवितायै नमः
ॐ रत्नप्रकाशकिरीटधारिण्यै नमः
ॐ जगन्मोहिन्यै नमः
ॐ शक्तिस्वरूपिण्यै नमः
ॐ प्रसन्नोदयायै नमः
ॐ इन्द्रादिदैवत यक्षकिन्नर किम्पुरुष पूजितायै नमः
ॐ सर्वलोकनिवासिन्यै नमः
ॐ भूजयायै नमः
ॐ ऐश्वर्यप्रदायिन्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ उन्नतस्थानस्थितायै नमः
ॐ मन्दारकामिन्यै नमः
ॐ कमलाकरायै नमः
ॐ वेदान्तज्ञानरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वसम्पत्तिरूपिण्यै नमः
ॐ कोटिसूर्यसमप्रभायै नमः
ॐ पूजाफलदायिन्यै नमः
ॐ कमलासनादि सर्वदेवतायै नमः
ॐ वैकुन्ठवासिन्यै नमः
ॐ अभयदायिन्यै नमः
ॐ द्राक्षाफलपायसप्रियायै नमः
ॐ नृत्यगीतप्रियायै नमः
ॐ क्षीरसागरोद्भवायै नमः
ॐ आकाशराज पुत्रिकायै नमः
ॐ सुवर्णहस्तधारिण्यै नमः
ॐ कामरूपिण्यै नमः
ॐ करुणाकटाक्षधारिण्यै नमः
ॐ अमृतासुजायै नमः
ॐ भूलोकस्वर्गसुखदायिन्यै नमः
ॐ अष्टदिक्पालकाधिपत्यै नमः
ॐ मन्मधदर्प संहारिण्यै नमः
ॐ कमलार्थभागायै नमः
ॐ स्वल्पपराध-महापराध-क्षमायै नमः
ॐ शतकोटितीर्थवासितायै नमः
ॐ नारदादि मुनिश्रेष्ठ पूजितायै नमः
ॐ आदिशन्करपूजितायै नमः
ॐ प्रीतिदायिन्यै नमः
ॐ सौभाग्यप्रदायिन्यै नमः
ॐ महाकीर्ती प्रदायिन्यै नमः
ॐ कृष्णातिप्रियायै नमः
ॐ गन्धर्व शापविमोचकायै नमः
ॐ कृष्णपत्न्यै नमः

ॐ त्रिलोकपूजितायै नमः
ॐ जगन्मोहिन्यै नमः
ॐ सुलभायै नमः
ॐ सुशीलायै नमः
ॐ अंजनासुतानुग्रहप्रदायिन्यै नमः
ॐ भक्त्यात्मनिवासिन्यै नमः
ॐ संध्यावन्दिन्यै नमः
ॐ सर्वलोकमात्रै नमः
ॐ अभिमतदायिन्यै नमः
ॐ ललितावधूत्यै नमः
ॐ समस्तशास्त्र विशारदायै नमः
ॐ सुवर्णाभरणधारिण्यै नमः
ॐ इहपरलोक सुखप्रदायिन्यै नमः
ॐ करवीरनिवासिन्यै नमः
ॐ नागलोकमणिसह आकाशसिन्धु कमलेश्वर पूरितरधगमनायै नमः
ॐ श्री श्रीनिवासप्रियायै नमः
ॐ चन्द्रमन्डलस्थितायै नमः
ॐ अलिवेलु मन्गायै नमः
ॐ दिव्यमन्गल धारिण्यै नमः
ॐ सुकल्याणपीठस्थितायै नमः
ॐ कामकवनपुष्पप्रियायै नमः
ॐ कोटि मन्मधरूपिण्यै नमः
ॐ भानुमन्डलरूपिण्यै नमः
ॐ पद्मपादायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ सर्वलोकसभान्तर धारिण्यै नमः
ॐ सर्वमानसवासिन्यै नमः
ॐ सर्वायै नमः
ॐ विश्वरूपायै नमः
ॐ दिव्यज्ञानायै नमः
ॐ स्वमन्गलरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वानुग्रहप्रदायिन्यै नमः
ॐ ॐकारस्वरूपिण्यै नमः
ॐ ब्रह्मज्ञानसंभूतायै नमः
ॐ श्री पद्मावत्यै नमः
ॐ सद्योवेदवत्यै नमः
ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः

॥ इति श्री पद्मावती अष्टोत्तर शतनामावलिः ॥

धूपम्

दशांगम् गुग्गुलोपेतं गोघृतेन समन्वितम् । धूपं गृहाण देवेश सर्वलोक नमस्कारा ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – धूपमाघ्रापयामि
(स्वामीजी के मूर्ती की अगरबत्ती और धूप से आरती करे।)

दीपम्

त्रिलोकेश महादेव सर्वज्ञान प्रदायक । दीपं दास्यामि देवेश रक्षमाम भक्तवत्सल ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – दीपं दर्शयामि
(स्वामीजी के मूर्ती की दीप से आरती करे ।)

नैवेद्यम्

सर्वभक्षैश्च भोज्जैश्च रसै षडभिः समन्वितं । नैवेद्यन्तु मयानीतम गृहाण पुरुषोत्तम ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – नैवेद्यं समर्पयामि
(स्वामीजी को प्रसाद चढाये। अगर केला है तो "कदलीफल निवेदयामि", नारियल है तो "नारिकेल फलं निवेदयामि" ऐसे कहे, अगर गुड है तो "गुडोपहार नैवेद्यम् समर्पयामि" कहे।)

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ आपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदनाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ परब्रह्मणे स्वाहा, ॐ भूर्भुवः सुवः तत्सवितुर–वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात, ॐ आपो ज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम मध्ये मध्ये पानीयम् समर्पयामि
अमृतापिधानमसि, उत्तरापोशनम समर्पयामि, हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि, पुनराचमनीयम समर्पयामि.

ताम्बूलम्

पूगीफलैः सकर्पूरैः नागवल्लीदलैर्युतं । मुक्ताचूर्ण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – ताम्बूलम समर्पयामि.

नीराजनम्

श्रियेः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम । श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मन्गलम् ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः नीराजनम् दर्शयामि
पुनराचमनीयम् समर्पयामि।

मंत्रपुष्पम्

ॐ सहस्त्रशीर्षम देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवं विश्वं नारायणन्देवम अक्षरं परमं पदं ॥१॥
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिं विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वं उपजीवति ॥२॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं शाश्वतं शिवमच्युतं नारायणं महाज्ञेयं विश्वत्मानं परायणं ॥३॥
नारायण परोज्योतिः आत्मा नारायणः परः नारायण परम् ब्रह्म तत्वम् नारायणः परः
नारायण परो ध्याता ध्यानम् नारायणः परः ॥४॥
यच्च किन्चित् जगत्सर्वं दृश्यते श्रुयतेपि वा अन्तर्बहिश्चतत्सर्वम् व्याप्या नारायणः स्थितः ॥५॥
अनन्तम् अव्ययम् कविं समुद्रेन्तम् विश्वशम्भुवम् पद्मकोश प्रतीकाशम् हृदयम् चाप्यधोमुखम् ॥६॥
अधोनिषट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति। ज्वालामालाकुलंभाति विश्वस्यायातनम् महत ॥७॥
सन्ततं शिलाभिस्तु लंबत्याकोशसन्निभम् तस्यान्ते सुशिरम् सूक्ष्मम् तस्मिन् सर्वम् प्रतिष्ठितम् ॥८॥
तस्यमध्ये महान् अग्निः विश्वारचिर्विश्वतो मुखः सोग्रभूग्विभजन् तिष्ठान्नाहार मजरः कविः
तिर्यगूर्ध्वा मधश्शायीरश्मया स्तस्य सन्तता ॥९॥
संतापयति स्वं देह मापादतलमस्तकः तस्य मध्ये वन्हि शिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः ॥१०॥
नीलथो यदमध्यस्ता विद्युल्लेखेव भास्वरा नीवारशूकवत्तन्वी पीताभा स्वत्यनूपमा ॥११॥
तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः स ब्रह्म स शिव स हरि स इन्द्र सोक्षरः परमास्वरात् ॥१२॥

ॐ तद ब्रह्म, ॐ तद वायुः, ॐ तदात्मा, ॐ तत्सत्यम, ॐ तत्सर्वम, ॐ तत्पुरोर्नमः
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायाम् विश्वमूर्तिषु त्वम् यज्ञस्त्वम् वषट्कारस्त्वम् इन्द्रस्त्वम् रुद्रस्त्वम्
विष्णुस्त्वम् ब्रह्मत्वम् प्रजापतिः त्वम् तदाप आपो ज्योति रसोवृतम् ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम ॥१३॥
गदा पुनः शंखरथान्गकल्पक ध्वजारविंदांकुश वज्रलाश्चित हे! श्रीनिवास त्वत् चरणाम्बुज द्वयं मदीय
मूर्धान मलज ॐ निरंजनाय विद्महे निराभासाय धीमहि तन्नो श्रीनिवासः प्रचोदयात्
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – दिव्यमन्त्रपुष्पं समर्पयामि

प्रदक्षिण नमस्कारः

श्लोकं: यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ पापोहम् पापकर्माहम् पापात्मा पापसंभवः । त्राहिमाम कृपमया देव शरणगतवत्सल ॥ अन्यधा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जनार्दन ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – आत्मप्रदक्षिण नमस्कारान समर्पयामि

विविधोपचार पूजा

छत्रं धारयामि । चामरं वीजयामि । नृत्यं दर्शयामि । गीतं श्रावयामि । वाद्यं घोषयामि । आंदोलिकान आरोहयामि । आश्वानारोहयामि । गजानारोहयामि । समस्त रजोपचार, शक्त्युपचार, यन्त्रोपचार, देवोपचार, सर्वोपचार पूजां समर्पयामि ॥

क्षमार्पणम्

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन । यत्पूजितम् मया देव परिपूर्णम् तदस्तुते ॥

अनया ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजया च भगवन सर्वात्मकः श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री वेंकटेश्वर स्वरुपो भगवानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु। श्री वेंकटेश्वर देव प्रसादं शिरसा गृह्णामि।

तीर्थम्

अकाल मृत्युहरणं सर्वव्याधि निवारणम् । सर्व पापक्षयकरं देव पादोदकं पावनं शुभं ॥

नैवेद्यम्

ॐ भूर्भुवस्सुवः, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोः देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्, सत्यं त्वर्तेन परिषिंचामि, अमृतमस्तु अमृतोपस्तरणमसि, ॐ प्राणाय स्वाः, ॐ अपानाय स्वाः, ॐ व्यानाय स्वाः, ॐ उदानाय स्वाह, ॐ समानाय स्वाः, ॐ ब्रह्मणे स्वाः॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्रीवेंकटेश्वर स्वामिने नमः – महानैवेद्यम् समर्पयामि ॥
अमृतापिधानमसि उत्तरापोशनम् समर्पयामि, हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि, शुद्ध आचमनीयं समर्पयामि ॥
ताम्बूलं समर्पयामि, सुवर्णमन्त्रपुष्पं समर्पयामि, प्रदक्षिण नमस्कारन समर्पयामि ॥
अनयाध्यानावाहनादि षोडषोपचार पूजया भगवान सर्वात्मकः श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत वेंकटेश्वर स्वामी सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भवतु, श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत वेंकटेश्वर स्वामी प्रसादं शिरसा गृह्णामि ॥

उद्वासनम्

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकं महिमानस्सचन्ते यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थान श्री वेंकटेश्वर । भक्ताभीष्ट समृध्यर्थम् पुनरागमनाय च ॥
श्री लक्ष्मी पद्मावती समेत श्री वेंकटेश्वर स्वामी यथास्थानं उद्वासयामि॥

प्रथम अध्याय

श्री भगवान उवाच

कलियुग में एक दिन शुभ मुहुर्त में तिरुमला पहाड पर (जिसे धरती का वैकुंठ कहा जाता है।) "विश्वपति" नामक एक भक्त पर श्री बालाजी की कृपा हुई। श्री विष्णु के अवतार श्री बालाजी (वेंकटेश्वर) जो यहाँ श्रीनिवास के रूप में पूजे जाते है। उन्होने विश्वपति को "श्री बालाजी व्रत कथा" नाम से प्रसिध्द इस ग्रंथ की रचना करने की आज्ञा दी। और कहा– "हे मेरे प्रिय भक्त विश्वपति, मेरे प्रिय होने के कारण इस व्रत को विस्तार रुप से तुम्हे बाता हूँ। सुनो, ये व्रत मुझे अति प्रिय है। आसान होने के कारण इसे सभी लोग संपन्न कर सकते हैं।

कलियुग में मानव अपने पाप कर्मों का फल भोगता हैं। अनेक कष्ट सहते हुए जीवन निर्वाह करता है। कुछ भक्त अपने दु:ख मुझे बताकर उन्हे दूर करने के लिये कहते है। बहुत से पैसे खर्च कर वो मुझे देखने के लिये तिरुमला की यात्रा करते है। मेरे भक्तों से मुझे प्रेम है। वे मुझपर अपना पूरा भार डाल देते है। मैं उन्हे धर्म के मार्गपर चलाता हूँ।

अभी मैं जो यह व्रत कथा तुम्हे बताने जा रहा हूँ, वो "श्री बालाजी की कथा" के नाम से प्रसिद्ध होगा। ये मेरा व्रत मुझे अतिप्रिय है। जो व्यक्ति इसे भक्ति और निष्ठा से करेगा वह तुरंत पार पायेगा। कोई भी व्यक्ति कभी भी इस व्रत को संपन्न कर सकता है। मुख्य रूप से मार्गशीर्ष, माघ, कार्तिक महिनों में पूर्णमासी, पंचमी, सप्तमी, एकादशी तिथियों पर या श्रवण, स्वाति नक्षत्रों पर इसे करना श्रेष्ठ होता है।

इस घोर कलियुग में मेरे भक्त जो कष्ट सह रहे है उन्हे मैं जानता हूँ। तुम्हे जब भी कोई कष्ट हो, कोई समस्या हो, स्वास्थ्य ठीक ना हो, नौकरी, व्यापार में समस्याएँ हों, मन अशांत हो तो इस व्रत को संपन्न करना चाहिये। इससे सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। घर में शुभ कार्य होने पर, इस व्रत को संपन्न करने से बिना किसी समस्या के कार्य पूर्ण हो जाता है। इस व्रत को संपन्न करते ही सभी सुख प्राप्त होते है और अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

सबेरे या शाम इस व्रत को संपन्न कर सकते है। इस व्रत में पाँच अध्याय है। इनका पठन भक्ति के साथ करना चाहिये। अपने घर में या निवास स्थान पर, मंदिर में या किसी भी पवित्र स्थान में, नदी तट पर संपन्न कर सकते है।

यदि संभव हो तो अपने बंधु, मित्रों के साथ इसे संपन्न करने से ज्यादा श्रेष्ठ होता है। जो इसे संपन्न करते है या जो इसे सुनते है, व्रत संपूर्ण होने के बाद प्रसाद को भक्ति से स्वीकार करते है, वो अष्ट ऐश्वर्यों को प्राप्त करते है। इससे पहले भी मेरे भक्तों ने, कई मुनियों ने इस व्रत को संपन्न किया और मेरा आशीर्वाद पाया। भूलोक में रहनेवाले सभी को यह व्रत आनंद प्रदान करेगा और शुभ फल भी प्राप्त होगा। शांत चित्त से मुझे याद करते हुए इस व्रत का पालन करो।

सर्व प्रथम जहाँ व्रत करना चाहते हो, उस स्थल को साफ करो। मंडप की व्यवस्था कर मेरी तस्वीर जिसमें मेरी प्रिय सखियाँ श्री देवी, भूदेवी हैं, उस तस्वीर को इस मंडप पर स्थापित करो। मंडप को दीवार से लगाकर भी रख सकते हो। अन्य किसी इच्छुक देवता की तस्वीर भी सख सकते हो। नवग्रहों और अष्ट दिक्पालकों को या तो मन में नमस्कार करो या उनका आव्हान भी कर सकते हो।

सबसे पहले हल्दी से बनी गणेश की पूजा करनी चाहिये। उसके बाद उस व्रत के पाँचों अध्यायों का निष्ठा से पठन करना चाहिये। यही प्रथम अध्याय है। अन्य चार अध्याय मेरे अत्यंत प्रिय पात्र विश्वामित्र, वशिष्ठ, भरद्वाज, अत्रि मुनिश्वरों के प्रवचना रूप में है। पाँच अध्यायोंको पढने के बाद मेरे प्रिय श्लोक भी पढ सकते हो। हर अध्याय के अंत में गोविंद, गोविंद, गोविंद तीन बार स्मरण करना चाहिये।

आम लोगों के कष्टों को मैं जानता हूँ। इसी लिये मेरी एक बात सुनो, यदि किसी कारण इस व्रत को विस्तार रूप से संपन्न करने में कोई समस्या आ रही हो तो मेरे तस्वीर को सामने रख कर पहले गणेश जी की फिर नवग्रह देवताओं और अष्टदिक्पालकों को स्मरण कर, पाँच कहनियाँ पढकर अपने मन में जो इच्छा है, उसे मुझे बताओ, मैं उसे प्रसाद के रूप में प्रदान करुँगा। इस प्रकार करने से भी कार्य की सिद्धि होती है। तुम्हारे कष्ट दूर हो जायेंगे और शुभ फल प्राप्त होगा।

जो व्यक्ति इस व्रत को भक्ति से संपन्न करेगा, मैं उसके घर किसी ना किसी रूप में आकर प्रसाद स्वीकार करुँगा। मेरी कृपा आप सभी को हमेशा प्राप्त होगी। श्री बालाजी ने तिम्मुराज विश्वपति रामकृष्णमूर्ति "विश्वपति" को इस व्रत कथा को विस्तार से बताया। कलियुगवासी हम सभी इस व्रत को संपन्न कर श्री बालाजी की कृपा के पात्र बन सकते है। इस व्रत को संपन्न कर हम अपने सभी कष्ट दूर कर सकते हैं और उचित फल भी प्राप्त कर सकते हैं।

गोविंद...गोविंद...गोविंद

प्रथमोध्याय समाप्तं।

श्रिय: कांताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम् ।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥

द्वितीय अध्याय
श्री विश्वामित्र उवाच

महातप: संपन्न साक्षात् श्री विश्वामित्र जी ने हम पर कृपा की और प्रवचन करते हुए कहा- "हे कलियुग वासियों! श्रीनिवास के भक्तों! "श्रीबालाजी व्रत कथा" जिसे आप संपन्न कर रहे हो वह बहुत ही पवित्र है, महिमा से पूर्ण है। यह व्रत कलियुग में श्री नारायण जी की करुणा और दया प्राप्त करने का अत्यंत सरल साधन है। प्राचीन काल में श्री बालाजी के प्रिय भक्तों ने इसे संपन्न कर अपनी कामनाओं को पूर्ण किया। इस व्रत कथा के बारे में हमें बताकर श्री बालाजी ने हमारे प्रति जो दया दिखाई है उसके लिए हम उन्हे प्रणाम करते है।

प्राचीन काल में मगध राज्य में विष्णुचित्त नामक एक भक्त रहता था। उसकी नौ कन्याएँ थी। विद्वान होने पर भी वह अत्यंत गरीब था। विष्णुचित्त की पत्नी तारामति हमेशा नारायणजी की प्रार्थना करती रहती थी।
विवाहादि शुभकार्य संपन्न कर जो भी पैसे दक्षिणा के रूप में मिलते थे उससे वे मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे। कन्याएँ यौवनावस्था में पदार्पण कर चुकी थी । तारामति हमेशा इसी चिंता में रहती थी कि इन कन्याओं का विवाह किस प्रकार संपन्न होंगे। वह बालाजी की प्रार्थना करते हुए सदा अपना समय गुजारती थी।

वह तो बालाजी की भक्त थी और बालाजी अपने भक्तों से अत्याधिक प्रेम करते है। उस दिन माघ पूर्णिमा थी। सवेरे एक वृद्ध ब्राह्मण ने विष्णुचित्त के दरवाजे पर दस्तक दी । और कहा -"हे स्वामी, मैं बंग देश का वासी हूँ। एक यज्ञ के सिलसिले में दूसरे देश जा रहा हूँ, रास्ते में यहाँ आया हूँ। मुझपर दया करो और अपने घर में एक दिन के लिए रहने दो, कल सवेरेही मैं यहँ से चला जाऊँगा"। उन की बातें सुनकर विष्णुचित्तने कहा, 'नाथ, इससे बढकर खुशी और क्या हो सकती है। अतिथि साक्षात् नारायण जी के समान होते है। ऐसे हमारे पुराणों में कहा गया है। आप बिना किसी संकोच के हमारे घर में रह सकते हैं।' ऐसा कह कर उसने उस ब्राह्मण को घर के अंदर बुलाया और उनका सत्कार किया।

दोपहर में भोजन के बाद उस वृद्ध ने तारामति से पूछा - "माता क्या बात है? तुम कुछ चिंतितसी लगती हो? बिना किसी संकोच के बात बताओ"। तारामति ने कहा - "स्वामी आप तो महातपस्वी है । आप के मुख का तेज उस वैकुंठवासी के समान है। आप से क्या छुपाना। मेरी चिंता मेरी कन्याओं का विवाह है"। उस पर वृद्ध ने कहा- "माता! तुम्हारा दु:ख मैं जानता हूँ। तुम्हारे सभी कष्ट दूर हों और तुम्हारी कन्याओं की शादी हों इसके लिये मैं एक अद्भुत व्रत बताता हूँ, सुनो, इस व्रत को संपन्न करने से तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो जायेंगे। श्री बालाजी के व्रतों में से यह सबसे सरल है"। कहते हुए उन्होने उस दंपति को पूरा व्रत विधान बताया। व्रत विधान सुनकर विष्णुचित्त ने कहा- "स्वामी, यह तो अत्यंत संतोष की बात है, इससे बढकर सौभाग्य और क्या होगा? कहते है ना- 'शुभस्य शीघ्रं'। आज माघ पूर्णिमा है, बहुत ही शुभ दिन है। आपके कथा अनुसार हम आज ही इस व्रत को संपन्न करेंगे"। विष्णुचित्तने पत्नी तारामति, और सभी कन्याओं के साथ मिलकर उस दिन शाम में ही अपने बंधु-मित्रों के साथ भक्ति और निष्ठा से बालाजी व्रत को संपन्न किया। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने व्रत पूरा होने के बाद चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया और अपने-अपने घर प्रस्थान किया। तब विष्णुचित्त और तारामति ने ब्राह्मण के चरणों को नमस्कार किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। ब्राह्मणोत्तम ने भी चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया और कहा- "आपकी मनोकामना पूरी हो, श्री लक्ष्मी, श्री बालाजी की कृपा हो"।

अंधेरा हो चला था और निद्रा समय आसन्न था। विष्णुचित्त ने उस ब्राह्मण को एक फटी चादर देते हुए आँखों में आसू लिये कहा- "स्वामी! मैं अत्यंत दरिद्री हूँ, इससे अच्छी चादर मेरे पास नही है, मुझे क्षमा करे, आज की रात इसी पर विश्राम करे"। ब्राह्मण मुस्कुराते हुए बोले- "कोई बात नही, मैं बाहर बरामदे में सो जाता हूँ"। कुछ समय बाद ही सभी निद्रालोक में विचरण करने लगे।

आधी रात का समय था, बिजली की गडगडाहट के साथ बारिश शुरू हुई। चारों ओर अंधेरा था... कहीं कुछ नही दिखाई दे रहा था। विष्णुचित्त इस चिंता में था कि वृद्ध ब्राह्मण बाहर कैसे सो रहे होंगे। उस समय कुछ सूझ भी नही रहा था। किसी तरह उन्होने रात गुजारी... सवेरा हुआ... बारिश भी थम चुकी थी। पति-पत्नी यही सोच रहे थे कि ब्राह्मण की क्या दशा हुई होगी, कितना सहा होगा उन्होने। यही सोचते हुए वो बाहर आए, उन्हे एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। ... वहाँ विप्रोत्तम नही थे। फटि हुई चादर की जगह रेशम का पितांबर रखा हुआ था। उस पितांबर पर "श्री बालाजी के मूर्ती" - दिखाई दी। वे सब कुछ समझ गये। उनकी खुषी का कोई ठिकाना नही रहा। उनके घर आये ब्राह्मण और कोई नही साक्षात् श्री नारायणजी ही थे। ... हे बालाजी! क्या भाग्य है हमारा... पर हम उनको पहचान नही पायें। ...हमने उनको फटी हुई चादर दी यह सोचते हुए उन्होने श्री बालाजी की मुर्ती को हाथ में लेकर आँखों से लगाया और घर के अंदर आये... पूरा घर सोने से भरा हुआ था। जहाँ देखो वहाँ धन राशी। हे भगवान! श्री बालाजी की व्रत कथा की महिमा से ही यह सब संभव हो सका। ऐसा कहते हुए वे भगवान की स्तुति करने लगे।

आपने देख। साक्षात् श्री बालाजी ही उस भक्त के घर आये थे। व्रत विधान बताया और चरणामृत, प्रसाद भी ग्रहण किया। श्री बालाजी बहुत ही करुणामय है। जो भी इसे व्रत को भक्ति और निष्ठा से करेगा उसके घर स्वयं भगवान किसी ना किसी रूप में आयेंगे। आप सभी इस व्रत को संपन्न कर भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते है।

श्री महर्षि विश्वामित्र जी ने यह द्वितीय कथा इस तरह बताई।
'श्री लक्ष्मी श्रीनिवास कटाक्षं सिद्धिरस्तु'।

गोविंद...गोविंद...गोविंद

द्वितीयोध्याय: समाप्तं

श्रिय: कांताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम् ।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ||

तृतीय अध्याय

श्री वशिष्ठ उवाच:

यह अध्याय महातपोनिष्ठ वरिष्ठ श्रीवशिष्ठ मुनि ने श्रीनारायणजी की कृपा से हमे विस्तार रूप से बताया है। "हे कलियुग वासियों। श्रीबालाजी के प्रिय भक्तों। वैकुण्ठ में निवास करनेवाले श्रीनारायणजी आज के तिरूमला में स्थित श्रीबालाजी ही है। कलियुग वासियों के कष्ट दूर करने के लिये भगवान आपके बहुत समीप तिरुमला पहाड पर अवतारित हुए है। श्री बालाजी को खुश करने के लिए यह व्रत उत्तम है और सरल भी है। इस व्रत को जो भक्ति और निष्ठा से संपन्न करता है, उसे सभी सुख प्राप्त हो जाते है।

प्राचीन समय में अवंती देश में भाग्यनगर नामक एक नगर था। नाम के ही अनुरुप वहाँ अनेक धनवान (व्यापारी) रहते थे। पर वे अपनी संपत्ति को देख घमंड करते थे और आम लोगों को हीन दृष्टी से देखते थे। धन-दौलत उनकी स्वार्जित है ऐसा सोचकर घमंड करते थे। भगवान की नित्य पूजा-पाठ तो उन्होने पहले ही छोड दी थी। कम से कम विशेष दिनों में भी वे ना मंदिर जाते ना पूजा करते ना ही दीप जलाते। एक दिन सभी धनवान अपनी-अपनी पत्नीयों के साथ प्रीति भोज में व्यस्त थे। उस नगर की पूर्व दिशा में ही श्री लक्ष्मी नारायण जी का मंदिर था जहाँ दीप जलानेवाला कोई नही था। उस दिन विशेष एकादशी थी, जिसे एक पर्व दिन भी माना जाता है। पर उस नगर के एक भी धनवान के मन में मंदिर में पूजा करने का विचार नही आया। शाम होते-होते आकाश में घने बादल छा गये और मुसलाधार बारिश होने लगी। व्यापारियों के घर पानी से भर गये। चारों ओर अंध:कार हे अंध:कार था। सवेरे होने तक पूरा नगर पानी में डूब गया। व्यापारियों के घर टूट-फूट गये। उनका सारा ऐश्वर्य समाप्त हो गया। ऐसा उपद्रव क्यों मचा... यह प्रलय कैसे हो गया? किसी को कुछ भी समझ में नही आ रहा था। इतने में उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। नगर के बाहर जो झोपडियाँ थी वे तो वैसी की वैसी थी। उनको आश्चर्य हुआ... इतनी बारिश में भी ये कैसे सही सलामत रही?... वे ऐसा मन ही मन सोच रहे थे कि इतने में बिजली कडकी और आकाशवाणी हुई।

"ए मुर्खो। तुम्हारी संपत्ति तुम्हारी अपनी है, स्वार्जित है ऐसा सोचते थे, इसी लिये ऐसा हुआ है... इस झोपडी में रहनेवाला देव मेरा प्रिय भक्त है। आम आदमी होने पर भी देव नित्य तुम्हारे नगर में स्थित श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर में दीप जलाता था। इतना ही नही हर एकादशी के दिन यथा संभव वह श्री बालाजी व्रत कथा भी संपन्न करता था, इसी लिये इन झोपडीयों में रहनेवाले सभी लोग सुरक्षित रहे। आप सभी यदि व्रत संपन्न करेंगे तो अपने-अपने ऐश्वर्य को पुनः प्राप्त कर सकते हो"। आकाशवाणी सुनते ही तुरंत वे सभी लोग उस मंदिर में गये और जैसे, संभव हो सका, वैसे सभी लोगोंने एक-दूसरे के सहयोग से श्री बालाजी की व्रत कथा संपन्न की। ऐसा करते ही सभी को उनके घर पूर्व रुप में ही प्राप्त हो गये। तब से वे सभी श्रीबालाजी के भक्त बन गये और हर एकादशी को श्रीबालाजी का व्रत संपन्न करते और सुख-शांति प्राप्त कर रहने लगे। अंत में उन्होने मुक्ति भी प्राप्त की।

श्रीवशिष्ठजी ने इस प्रकार ये कथा सुनाई।

गोविंद...गोविंद...गोविंद

तृतीयोध्याय: समाप्तं |

श्रिय: कांताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम् ।

श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ||

चतुर्थ अध्याय
श्री भरद्वाज उवाच:

श्रीनारायण जी को "श्रीबालाजी व्रत कथा" अत्यंत प्रिय है। चतुर्थ अध्याय के रूप में हमारे सामने श्री भरद्वाज मुनिद्वारा बतायी नयी कहानी इस प्रकार है- "हे कलियुगवासियों, श्री नारायण के प्रिय भक्तों। आप जिस व्रत को संपन्न कर रहे है वह अद्भुत है। आपकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने का साधन है। श्री बालाजी को प्रसन्न करने का यह अत्यंत सरल उपाय है। आप सभी पर कृपा करने के लिये ही वैकुंठवासी भगवान श्रीनिवास के रूप में तिरुमला पहाड पर अवतरित हुए है। अनेक जन्मों के पुण्यफल से ही तिरुमला पहाड पर पैर रखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। और भगवान के दर्शन भी संभव होते है। इसी तरह इस "व्रतकथा" को संपन्न करने का संकल्प भी पूर्वजन्म के पुण्यफल से ही संभव होता है। जो व्यक्ति इस व्रत को संपन्न कर रहे है, या जो इस कथा को सुन रहे है, या जो भगवान के प्रसाद को ग्रहण करते है उन्हे भगवान की कृपा प्राप्त होती है और वे सौभाग्य भी पाते है।

प्राचीन काल में "नगरी" नामक एक ग्राम में धनगुप्त नाम का व्यापारी रहता था। वह बहुत ही लालची था। ऐश्वर्य प्राप्त करने पर भी उसका लालचीपन कम नही हुआ। यह समस्त ऐश्वर्य उसका ही कमाया हुआ है ऐसा सोचकर वह बहुत घमंड करता था। अहंकार मनुष्य का नाश करता है।

धनगुप्त की पत्नी कांतिमती अत्यंत भक्ति भावना रखती थी और निष्ठा से भगवान की पूजा करती थी। उनकी तीन कन्याएँ थी। तीसरी कन्या "कुमारी" में भक्ति भावना ज्यादा थी। वह हमेशा बालाजी का नाम ही जपती रहती थी। पिताजी को बिना बताये वह जब-तब श्री बालाजी के मंदिर में जाती थी और भगवान के दर्शन करती थी। घर आकर पिताजी को छोड अन्य सभी के साथ प्रसाद स्वीकार करती थी। पती के ऐसे व्यवहार से कांतिमती थोडी चिंतित होती थी।

एक दिन "कुमारी" की सहेली के घर पर "श्री बालाजी" का व्रत संपन्न हो रहा था, यह जानकर वो वहाँ गई। व्रत पूरा होने तक दोपहर हो चुकी थी। थोडासा प्रसाद उसने ग्रहण किया और थोडा वह अपने घरवालों के लिये एक कागज की पूडी में लेकर चली। बीच रास्तें में उसे प्यास लगने लगी। धूप भी बहुत तेज थी। उसने सोचा थोडी देर रुक कर, प्यास बुझाकर फिर चलूँ तो ठीक रहेगा। तभी उसे याद आया कि उसके पिता की दुकान अगली गली में ही तो है। वहाँ जाकर उसने पिताजी को पूजा की बात बिना बताये पिताजी से पानी माँगकर पिया और पिताजी गुस्सा करेंगे इस डर से उसने जल्दी-जल्दी पानी पिया। इस घबराहट में प्रसाद की पूडी वही दुकान में भुलकर चली गई।

एकाएक बाजार में हडकंप मच गया। लोग हाहाकार मचाते हुए इधर-उधर भागने लगे। आगजनी के कारण उस गली की सारी दुकानें जल कर राख होने लगी। वैसे भी दोपहर का समय था...उस पर गर्म हवाएँ चल रही थी...धनगुप्त का शरीर डर के मारे काँपने लगा। "...कुछ ही समय में उसकी दुकान भी जल कर राख हो जाएगी.." इस विचार से उस के हाथ-पैर काँपने लगे। सभी लोग अपनी-अपनी दुकानों से बाहर आकर इधर-उधर भागने लगे। पर धनगुप्त वही खडा रह गया। ...दुकान छोडकर जाने का मन नही कर रहा था... यदि वो दुकान में रहेगा तो जलकर राख हो जायेगा...सोचते हुए उसने घबराहट में उसके हाथ लगी पूडी को उठाया और बिना सोचे समझे जो हाथ आया वो मुँह में डाल दिया। उसे कुछ मीठा-मीठा सा पदार्थ लगा और मन भी शांत होने लगा।

तभी एक अद्भुत घटना घटी...आग धनगुप्त की दुकान तक आकर रुक गयी। आग की लपतें वहाँ नही आ पायी। ...यह कैसी विचित्र बात है...ये कैसी माया है? ...धनगुप्त के मुँहसे एक भी बात नही निकल पायी। ...उधर आगजनी की खबर सुनते ही पत्नी कांतिमती, अपने कन्याओं के साथ, बालाजी का स्मरण करते हुए दौडती हुई वहाँ आ गयी। ...आग उनके दुकान तक आकर कैसे रुक गयी यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ। तभी कुमारी को दुकान में भुली हुई पूडी की याद आई... धनगुप्त को समझने में देर नही

लगी कि उसने जो चीज मुँह में डाली थी वो और कुछ नही तो भगवान का प्रसाद ही था। और उसकी महिमा से ही वे इस दुर्घटना से चूक गये।

धनगुप्त ने श्रीबालाजी से क्षमा माँगी, गाल बजाये। शाम में ही नगरवासियों को बुलाकर "श्रीबालाजी की व्रत कथा" संपन्न की। तब से वह भगवान की सेवा में लीन हो गया और अंत में मोक्ष भी प्राप्त की। आपने देखा कि केवल प्रसाद ग्रहण करने से ही वो कितनी बडी दुर्घटना से चूक गया। बालाजी की महिमा अद्भुत है। आप सभी भी यथा संभव व्रत को संपन्न कर के भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते है।"

श्रीभरद्वाजजी ने इस प्रकार यह चतुर्थ कथा सुनायी।

गोविंद...गोविंद...गोविंद

चतुर्थोध्याय: समाप्तं |

श्रिय: कांताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम् ।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ||

पंचम अध्याय
श्री अत्रि उवाच:

तिरुमला-तिरुपती भूलोक का वैकुण्ठ धाम है। पुराणों में बताया गया है कि तिरुमला के समान पवित्र स्थल और श्री बालाजी जैसे देवता न तो पहले कभी हुए है और न कभी होंगे। श्रीनिवास के रुप में अवतरित श्री नारायण अपने भक्तों से बहुत प्रेम करते है। जो उन पर अपना पूरा भार डालकर उन्हे नित्य स्मरण करते है, जो सदाचार से पूर्ण जीवन बिताते है वो उनकी रक्षा करते है। ऐसे श्रीबालाजी को प्रसन्न करने का सबसे सरल उपाय है - "श्रीबालाजी की व्रत कथा" ।

इस अद्भुत व्रत कथा के बारे में महातपसंपन्न श्री अत्रि महर्षि ने कृपा करते हुए कहा है- " हे। बालाजी के प्रिय भक्तों। कलियुग में आपके सौभाग्य के बारे में क्या कहना। कृतयुग, त्रेतायुग और द्वापारयुग में अत्यंत कठोर तप-जप करने पर भी प्रसन्न न होने वाले श्री नारायण, इस युग में केवल नामस्मरण से ही आप लोगों पर कृपा कर रहे है। विश्वास के साथ उन्हे बुलाने पर वे तुरंत कृपा प्रदान करते है। ऐसे करुणामय है श्रीबालाजी। पवित्र तिरुमला पर तुम्हारा रखा हर कदम अनेक जन्मों के पुण्यफल के समान है।

प्राचीन काल में "कौमार" देश में "मित्र" नामक धोबी रहता था। वो अपने काम के साथ-साथ धार्मिक कार्य करता हुआ जीवन निर्वाह कर रहा था। उसकी अपंगता ही उसकी चिंता थी। इसी कारण धोए हुए कपडों की पोटली बनाकर, घर-घर घुमकर उन्हे लोगों तक पहुँचाना उसे धीरे धीरे मुश्किल लगने लगा। उसका परिवार बडा था। बिना मेहनत किए उसे भर पेट खाने को भी नही मिलता था। हमेशा वो श्री बालाजी की पूजा करता रहता था। कभी ना कभी भगवान उस पर कृपा करेंगे, इसी विश्वास से वो अपना जीवन गुजार रहा था। भक्तों पर कृपा करने वाले बालाजी सब कुछ देखते रहते है। जो व्यक्ति अपने कर्मों से मुक्ती पाता है उनके पास आकर, बालाजी किसी न किसी रुप में आकर उनकी रक्षा करते है।

एक दिन शाम के समय हमेशा की तरह मित्र कपडे धोकर कपडों की पोटली लादे धीरे-धीरे चलता हुआ आ रहा था। बीच रास्ते में उसे एक वृद्ध ब्राह्मण दिखाई दिये। गौरव की भावना से, बडे होने के कारण मित्र ने अपने कंधे पर लदी हुई पोटली को नीचे उतारकर वृद्ध ब्राह्मण को नमस्कार किया। तब उस विप्रोत्तम ने कहा- "तुम अपने इस पैर के कारण कितना कष्ट सह रहे हो। तुम्हारा दु:ख देखा नही जाता"। तब मित्र ने कहा-"हे नाथ। आप बुजुर्ग है। भरापूरा परिवार होने के कारण मुझे इस काम से मुक्ती नही मिल रही है। किसी तरह मेरी ये अपंगता दूर हो, ऐसा कोई उपाय बताइए"।

तब ब्राह्मण ने कहा-"सुनो भाई। मैं जरूर बताऊँगा। ध्यान से सुनो। मैं एक ऐसे व्रत के बारे में बताता हूँ जिसे संपन्न करने से तुम्हारी अपंगता दूर हो जाएगी। तुम्हे अष्ट ऐश्वर्यों की प्राप्ति होगी। व्रत संपन्न करते ही तुम्हे हजार अशर्फियाँ मिलेंगी... पर एक शर्त है... उसमें से आधे तुम मुझे दोगे।...कल मैं फिर इसी समय यहाँ मिलूँगा"। तब मित्र ने कहा- "स्वामी! इससे बढकर सौभाग्य और क्या हो सकता है? आज ही इस व्रत के बारे में बताइए, मैं उसे संपन्न करूँगा" । मित्र के उत्साह को देख वृद्ध ने श्री बालाजी व्रत कथा के बारे में बताया।

मित्र दुगुने उत्साह के साथ घर आया, पूरी कहानी पत्नी को बतायी और अडोस-पडोस के साथ मिलकर श्री बालाजी व्रत को संपन्न किया। चरणामृत, प्रसाद ग्रहण किया, घर आए सभी लोगों को भी दिया। तभी घर के बाहर कुछ कोलाहल सुनाई दिया। ...मित्र का बेटा बाहर से दौडता हुआ आया और बोला- "पिताजी! पिताजी! राज-रक्षक आपके लिये आए है। राजा ने आपके लिये भेंट भी भेजी है"। इतने में रक्षक भी वहाँ आ गये। उन्होने बताया कि उसकी नियुक्ति राज दरबार में धोबी के रुप में हो गयी है। राजा ने हजार अशर्फियाँ पुरस्कार स्वरूप भेजी है। ऐसा कहकर उन्होने मित्र के हाथ में हजार अशर्फियों की पोटली रख दी। एक हफ्ते के अंदर-अंदर उसे आकर नौकरी में भर्ती होने को भी कहा। मित्र के आनंद की सीमा नही थी। एक हफ्ता क्यों, कल ही क्यों नही सोचकर उसने अपनी पोटली-वोटली बाँधी और दूसरे दिन सवेरे ही वो जाने को तैयार हो गया। इस जल्दबाजी में वह उस वृद्ध की बातें भूल गया। बीच

रास्ते में उसे उसकी बात याद आ गयी, पर ठीक है...अगले महिने मिल लेता हूँ सोच कर वह राज दरबार में अपने काम पर लग गया। दिन...महिने बीते। ब्राह्मण के वेश में आए भगवान को गुस्सा आया। भगवान ने सोचा मनुष्य की प्रवृत्ति ऐसी ही होती है। उसे मुझे अपनी महिमा बतानी होगी।

दूसरे ही दिन राणीवास से आभूषण चोरी हो गये... चोरी का इल्जाम मित्र पर आया। मित्र को कारावास की सजा हुई। ...राज रक्षकोंने उसे तरह-तरह की यातनाएँ दी। ...ऐसा क्यों हुआ...उस पर यह इल्जाम क्यों लगा, सोचते हुए मित्र को रात को सपने में भगवान दिखाई दिये। उन्होने बताया कि "वृद्ध ब्राह्मण के रूप में वे ही आये थे, वो अपनी बात से मुकर गया इसलिये ये सब हुआ है..." तब मित्र ने कहा-"हे नाथ! मैं पापी हूँ... मैंने बहुत बडा पाप किया है... कृपया मुझ पर दया कीजिये... अब मैं हर महिने आपका व्रत संपन्न करूँगा। मेरी आय का आधा भाग जीवन भर आपको समर्पित करूँगा"। गाल बजाकर उसने भगवान की हर तरह से प्रार्थना की। भक्तों की पुकार सुननेवाले भगवान ने खुशी-खुशी मित्र पर कृपा कर दी। भगवान की कृपा से राणी के आभूषण दूसरेही दिन मिल गये। राजाने ये भी जान लिया कि मित्रने चोरी नही की थी। मित्रको कारावास से रिहा कर दिया गया। तब से मित्र भगवान को दिये वचन अनुसार हर महिने श्री बालाजी का व्रत संपन्न करने लगा, और अपनी आय का आधा भाग भगवान को अर्पित करता रहा। सुख पूर्ण जीवन बिताते हुए उसने अंत में मोक्ष भी प्राप्त किया"।

श्री अत्रिजी ने ऐसा कहकर पाँचवे और आखरी अध्याय को समाप्त किया।

गोविंद...गोविंद...गोविंद

पंचमोध्याय: समाप्तं

श्रिय: कांताय कल्याण निधये निधयेर्धिनाम् ।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ||

तारिख : सितंबर १३, २०१०

तारिख : सितंबर १८, २०१०

तारिख : सितंबर १८, २०१०

तारिख : सितंबर २०, २०१०

तारिख : सितंबर २०, २०१०

तारिख : सितंबर २१, २०१०

तारिख : सितंबर २६, २०१०

तारिख : अक्टोबर १०, २०१०

श्री वेंकटेश्वर व्रत कथा

https://www.venkateswaravratham.org
info@venkateswaravratham.org